★ पात्रपरिचय ★

पुरुष

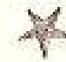
१. सूत्रधार ... नाट्यनिर्देशक ।

२. श्रीकृष्ण ... परमेश्वर, अवतारी पुरुष, राजा, नायक ।

३. नारद ... देवर्षि ।

४. धर्मदास ... द्वारपाल ।

५. धनञ्जय ... अर्जुन ।



स्त्री

१. नटी ... सूत्रधारक सहायिका ।

२. रुक्मिणी ... श्रीकृष्णक पटरानी ।

३. सत्यभामा ... श्रीकृष्णक छोटि रानी, मानिनी ।

४. सुभद्रा ... श्रीकृष्णक बहिनि, अर्जुनक स्त्री ।

५. मित्रसेना ... रुक्मिणीक सखी ।

६. सुमुखी ... सत्यभामाक सखी ।



श्रीः

उमापत्युपाध्याय-विरचितं

पारिजातहरण-नाटकम्

मङ्गलगीतम्—१

जय जय मधु-कैटभ-अर्दिनि[1] । जय जय महिषासुर-मर्दिनि ।।
धूमर-नयन भसम-मण्डिनि । चण्डमुण्ड दुहु शिर खण्डिनि ।।
रक्तबिजासुर - संहारिणि । शुम्भ-निशुम्भ-हृदय-दारिणि ।।
सभ सुर शक्ति रूपधारिणि । सेवक सबहुक उपकारिणि ।।
अनुपम रूप सिंहवाहिनि । सबहि समय रहिहह दाहिनि ।।
सुमति उमापति आशिष वानि[2] । सकल सभा जय करथु भवानि ।।

(नान्दी-श्लोकः[3])

क्षोणी यस्य रदे मृणालशकलं मूलार्णवः पल्वलं
स्वर्गङ्गा वसनं बिभाति, गगनं कस्तूरिका-लेपनम् ।

जय जगदम्ब ।।

मङ्गल गीत--१

अर्दिनि = मारनिहारि । मर्दिनि = नष्ट कएनिहारि । धूमर-नयन = धूआँक समान रंगक वा लाल ओ कारीक मिश्रणक रंगक (धूम्र) आँखि । मण्डिनि = अलंकृत । दारिणि = विदीर्ण कएनिहारि । दाहिनि = अनुकूल । सुमति = सुमँति = सुमन्त्री (उत्तम मन्त्री), सुबुद्धि ।

---

१ - 'क' 'ग' मे सम चरणक दीर्घान्त पाठ । छन्दक अनुरोधेँ दीर्घान्त वा ह्रस्वान्तपाठो उचित । परन्तु अन्तिमवर्ण सँ पूर्वक स्वरक गुरु उच्चारण अपेक्षित- अर्दीनि, मर्दीनि, मण्डीनि । २—'क' 'ख' 'ग' वानी, भवानी । ३ - 'ख' नान्दीपाठः ।

चन्द्रश्चारु-ललाटचन्दनमुडुश्रेणी गता माल्यतां
तेन श्रीधरणीधरेण हरिणा हिन्दूपतिः पाल्यताम् ॥१॥

अपि च,

यस्यास्यं पूर्णचन्द्रः स्ववचनममृतं, दिग्जयश्रीश्च लक्ष्मी-
र्दोःस्तम्भः पारिजातो भ्रूकुटिकुटिलता संगरे कालकूटः।
तीव्रं तेजोऽग्निरौर्वः पदभजनपरा राजराज्यस्तटिन्यः
पारावारो गुणानामतुल-रसमयः पातु हिन्दूपतिर्वः ॥२॥

(नान्द्यन्ते सूत्रधारः)

सूत्र० – अलमतिविस्तरेण। (नटीं प्रति) आर्ये! इहागम्यताम्।

नान्दी (नाटकक आरम्भिक मङ्गल पद्य)

जनिक दाँत पर पृथ्वी कमल-नालक खण्डरूप मे, (पृथ्वीक) आधारभूत समुद्र चभच्चा (छोटकी पोखरि)-रूप मे, स्वर्गक गङ्गा (मन्दाकिनी) कपड़ा रूप मे शोभित, आकाश कस्तूरीक लेपरूप मे, चन्द्रमा कपारक सुन्दर चाननक रूप मे ओ ताराक पंक्ति मालारूप मे छथि—से पृथ्वीक धारण कएनिहार श्रीविष्णु भगवान् (वराहावतार), हिन्दूपति हरिहरदेवक रक्षा करथि ॥१॥

आओरो—

जनिक मुँह पूर्णचन्द्र, अपन वचन अमृत, दिग्विजयक शोभा लक्ष्मी, स्तम्भ (खाम्ह) स्वरूप बाँहि पारिजातक गाछ, युद्ध मे भौंहक तनब विष, तीक्ष्ण प्रताप वड़वानल (समुद्रक आगि), चरणक सेवा मे लागल राजाक समूह (राजी) नदीस्वरूप छथिन्ह से ई अतुलनीय रसिक, गुणक समुद्र (पारावार) हिन्दूपति हरिहरदेव अहाँ सभक रक्षा करथु। (एहि पद्यमे समुद्रक गुण-सभक राजा मे आरोप करैत हुनका पारावार रूप मे चित्रित कएल गेल अछि) ॥२॥

(नान्दी-पद्यक अन्त मे सूत्रधार प्रवेश करैत छथि)

सूत्रधार—विशेष विस्तार (नान्दी पद्यक) कएनाइ उचित नहि। (नटीक प्रति) आर्ये! एम्हर आउ।

---

४ = 'ख' पारावारो गुणानामयमतुलगुणः पातु वो मैथिलेशः।

नटी—(प्रविश्य सूत्रधारं प्रति) आणवेदु अज्जो। [आज्ञापयत्वार्यः।]

सूत्र०—आदिष्टोऽस्मि यवन वनच्छेद-कराल-करवालेन विच्छेदगत चतुर्वेद-पथप्रकाशक-प्रतापेन भगवतः श्रीविष्णो र्दशमावतारेण हिन्दूपति-श्रीहरिहरदेवेन, यथा उमापत्युपाध्याय विरचितं नवपारिजातमङ्गलमभिनीय वीररसावेशं शमयन्तु भवन्तो भूपालमण्डलस्य। तद् गीयतां मङ्गलम्।

नटी—अहो भाअधेअं। [अहो भागधेयम्!]

(नाटक-रागे गीतम्—२)

सुरतरु घन उपवन करु मण्डप, वेदि रचल भल हिम-अचला।
अपनहि आनन दान वचन भल, पुनि-पुनि पाउनि भवानि भला ॥
परमेसरा परमेसरा, जय जय सभ रस पेसरा ॥ध्रुवम्॥

नटी—(प्रवेश कए) आर्य आज्ञा देथु।

सूत्रधार - यवनरूपी वनकेँ कटवा मे भयानक तरुवारिस्वरूप, विभागयुक्त वा कटल चारूवेदक मार्गकेँ प्रकाशित करबाक योग्य प्रतापवाला, भगवान् विष्णुक दशम अवतारस्वरूप, हिन्दूपति श्रीहरिहरदेवक आज्ञा भेटल अछि जे उमापति उपाध्यायक बनाओल नवीन पारिजात-मङ्गल नामक नाटकक अभिनय कए केँ अहाँलोकनि राजासभक वीररसक आवेश (संचार) केँ शान्त करियन्हु। तेँ मङ्गल गबैत जाउ।

नटी—अहो भाग्य!

नाटक-राग मे गीत—२

सुरतरु = देववृक्ष (पारिजात)। घन = सघन। मण्डप = मड़वा (देववृक्षक मण्डप बनओलनि)। वेदि = वेदी (विवाह मे बैसक बनाओल)। हिम-अचला = हिमालय। आनन = मुँह सँ (अपनहि मुहेँ भवानीक दान करबाक

चान-कला नयनानल थापल, मानल सुरुब भुजङ्गवरा ।
अमिञ-सार हवि अविरल होमल, हसल सकल सुर असुर नरा ॥
गाङ भिजाए भाङ भउ भोजन, सेज ओछाओल बाघछला ।
दीप समीप बरए फणि-मणिगण, देवि देख दुहु मने मिलला ॥
[५]भावें भगति भावित भव-भगवति, देथु सदा जय अभय वरा ।
भनथि उमापति सकल-नृपतिपति-हिन्दूपति प्रतिपालथु धरा ॥

नटी—(कर्णं दत्त्वा) अज्ज ! कीरिसो[६] सो कलअलो ? [आर्य ! कीदृशोऽसौ कलकलः ?]

सूत्र०—भगवान् श्रीकृष्णः सह रुक्मिण्या देव्या रैवतोपवनमभिवर्त्तते, तदिह गत्वा पश्यावः । (इति निष्क्रान्तौ)

(इति प्रस्तावना)

बाबय बजैत छथि; लोक मे कन्यादाता बाक्य पढ़ैत छथि, वर नहि)। पाउनि = पावनी (पवित्र कएनिहारि) । पेसरा = पेशल (निपुण) । चान-कला = चन्द्रमाक कला सँ आंशिक (कपार परक तेसर) अग्नि-स्थापना कएलनि—विवाह मे हवन होइछ, कांसाक पात्र द्वारा अग्नि-स्थापना होइछ । एतए चानकला कांस्यपात्रक काज करैत छनि । सुरुब = सु्रूप । भुजंगवरा = साँपकेँ । अमिअ = अमृत । हवि = घृत (चन्द्रमा सँ अमृत लए घृतक काज चलओलनि) । अविरल = अनवरत । होमल = होम कएल । गाङ = गंगा मे । फणि-मणि = साँपक मणि । भाव भगति = भक्ति भाव । भावित = ध्यान कएल गेल । भव-भगवति = महादेव ओ पार्वती । जय अभय वरा = विजय ओ अभयदान वरदान देथु । नृपति-पति = राजाक ईश = राजाधिराज।

नटी—(अकानि केँ) आर्य ! केहन ई हल्ला थिकैक ?

सूत्रधार—भगवान् श्रीकृष्ण रुक्मिणी देवीक संग रैवतपर्वतक उपवन दिस जाइत छथि । तेँ एतए जाए केँ देखी ।

(दुहू बाहर जाइत छथि) ।

प्रस्तावना समाप्त ॥

५ - ख ग - भाव । ६ - कीद्दसो - ख ।

(श्रीकृष्ण-प्रवेशकम्)

(मालव-रागे गीतम्—२)

कंस-केसि कुल मोचल, उग्रसेन देल राज ।
यदुकुल कएल निराकुल, तैओ बहुत अछ[७] काज ॥
[८]भूमिक भार उतारब, तारब[९] दानव लोक ।
धरम धरातल थापब, हरब साधुजन शोक ॥
गरब हरब सुरराजक, काज करब सभे[१०] जानि ।
भगत-भाव अवधारब, धरब परम पद आनि ॥
सकल-नरेश-मुकुटमणि, पटमहिषी - विरमान ।
हिन्दूपति रस-बिन्दक, सुमति उमापति भान ॥

(ततः प्रविशति श्रीकृष्णः, रुक्मिणी, सखी च ।)

श्रीकृष्णः—(स्वगतम्)—

भूमीभारनिवारणाय दुरितच्छेदाय शुद्धात्मनो
वैदार्थ-व्यवहारणाय च परित्राणाय धर्मस्य च ।

श्रीकृष्णक प्रवेशक गीत मालवराग मे—२

कंस-केसि = कंस ओ केशी नामक राक्षस । मोचल = मोक्ष देल (मारल)। निराकुल = शान्त (उपद्रव-रहित) । अवतारब = हटाएब । तारब = सदगति देब । गरब = गर्व (अहंकार) । सुरराज = इन्द्र । भगत-भाव = भक्तिभावना । अवधारब = विचारब । पद = उचित स्थान । पटमहिषी = पटरानी । विरमान = विशेष अनुरक्त, तल्लीन । बिन्दक = पओनिहार ।

(तखन श्रीकृष्ण रुक्मिणी ओ सखी प्रवेश करैत छथि)

श्रीकृष्ण—(मनहि मन) पृथ्वीक भार केँ हटएबाक लेल, पवित्र व्यक्तिक भय केँ नष्टकरबाक लेल, वेदक अर्थक व्यवहारक लेल, धर्मक रक्षाक लेल, देवताब्राह्मणक विद्वेषी दुष्टसभक घमण्डक शान्त करबाक

७—ख - अछि । ८— ख' भूमिभार अवतारब । ९ -'ग' मारब । १० - सब - ख ।

दर्पस्य प्रशमाय दुष्टमनसां देव-द्विजद्रोहिणां
ब्रह्मेन्द्रादि-मदक्षयाय च मया लब्धोऽवतारो भुवि ॥३॥

(प्रकाशम्) देवि ! दृश्यतां रैवतोपवने वसन्तशोभा।
(श्रीकृष्णो रुक्मिणी सखी च गीतं गायन्ति[११]।)

(वसन्त-रागे गीतम्—४)

अनगनित किंशुक चारु चम्पक बकुल बकहुल फुल्लिआ।
पुनु कतहु पाटलि पटलि नीप नेवारि माधवि मल्लिआ ॥
कर जोरि रुकुमिणि कृष्णसंग वसन्त-रंग निहारहीं।
ऋतु रभस सिसिर समापि रसमय रमथि संग विहारहीं ॥
अति मञ्जु मञ्जुल पुञ्ज पिञ्जल चारु चूअ विराजहीं।
निज मधुहि मातल पल्लवच्छले[१२] लोहितच्छवि छाजहीं ॥
पुनु केलि-कलकल कतहु आकुल कोकिला-कुल कूजहीं।
जनि तीनि जग जिनि[१३] मदन-नृपमनि विजय राज सुराजहीं ॥

लेल ओ ब्रह्मा इन्द्र आदि देवताक मद (अहंकार) क नाश करबाक लेल हम पृथ्वी पर अवतार लेल अछि ॥३॥

(सुनाए कें) रैवत पर्वतक उपवन मे वसन्तक शोभा कें देखू।
(श्रीकृष्ण रुक्मिणी ओ सखी गीत गबैत छथि।)

वसन्त-राग मे गीत—४

किंशुक = पलाश। चारु = सुन्दर। फुल्लिआ = फुलाएल। पाटलि-पटलि = पाँड़रि फूलक पंक्ति। नीप = कदम्ब। मल्लिआ = मल्लिका (चमेली)। रभस = बलजोरी। समापि = समाप्त कए। मंजु = सुन्दर। मञ्जुल-पुञ्ज = सुन्दर ढेर। पिञ्जल = पीयर। चूअ = चूत (आम)। पल्लवच्छले = नवीन पातक लाथें। लोहित = लाल। केलि-कलकल = विलास करैत गुनगुनाएब।

---

११ - 'ख' 'ग' मे एहि पाँतीक अभाव। १२ - पल्लवच्छवि ख ग। १३ - जिति-ख ग।

नव मधुर मधुरस-[१४]मुगुध मधुकर नीक-निक[१५] रस भावहीं।
जनि मानिनी[१६]-मन-मान-भञ्जन मदन गुण गुरु गावहीं ॥
बह मलय निर्मल[१७] कमल परिमल पवन उपवन सोहहीं[१८]।
ऋतुराज रैवत सकल दैवत मुनिहु मानस मोहहीं ॥
यदुनाथ साथ बिहार हरषित सहस-सोडह[१९] नायिका।
भन गुरु उमापति सकल नृपपति होथु मङ्गलदायिका ॥

श्रीकृष्णः—प्रिये ! विश्रम्यताम्। (इत्युपविश्य आकाशाभिमुखम्) अहो[२०] आश्चर्यम् !!

(नारद-प्रवेशकं बरारी[२१]-रागे गीतम्—५)

अवतरु अवनी तेज[२२] अकाश। न थिक दिवाकर, न थिक हुताश[२३] ॥
धोती धवल तिलक उपवीत। ब्रह्मतेज [२४]अति अधिक उदीत ॥
वैणव दण्ड वेद कर शोभ। आवथि नारद दरसन लोभ ॥

कोकिल-कुल = कोइलीक समुदाय। मधु-रस-मुगुध = मधुक आस्वादन मे मुग्ध। मधुकर = भौंरा। मलय-परिमल = मलयाचलक सुगन्धि। ऋतुराज = वसन्त। रैवत—रैवत-पर्वत पर। दैवत देवता। यदुनाथ—श्रीकृष्ण। सहस-सोडह—सोलह हजार।

प्रिये ! सुस्ता लिअ। (बैसिकें आकाश दिस) आश्चर्य !!

(नारदक प्रवेशक गीत मालव-राग मे—५)

अवतरु = उतरलाह। अवनी = पृथ्वी पर। दिवाकर = सूर्य। हुताश = अग्नि (आकाश सँ उतरैत नारदक तेज थिक, अग्नि नहि)। धवल = उज्जर।

---

१४ - लुब्ध - क। १५ - मधुकर कोकिला रस ख ग। १६ - मानिनीजन ख ग।
१७ - मलय परिमल कमल उपवन कुसुम सौरभ सोहहीं-ख ग। १८ - सोहन्ती - क।
१९ - षोडस - ख ग। २० - अहो (अभाव) ख ग। २१ - मालव - ख।
२२ - तेजस अकासे - ख ग। २३ - हुताशे - ख ग। २४ - तहु - क।

परम युगत तिनि जगतक होत । ब्रह्माक[२५] सुन, मोर शम्भुक मीत ॥
सुमति उमापति भन परमान । जगमाता देइ[२६] हिन्दूपति जान ॥

(ततो[२७] रङ्गभूमिस्थले प्रविशति नारदः ।)

नारदः—(सहर्षम्[२८])—

न शम्भुना वा न विरञ्चिना वा,
न योगिनां यन्मनसापि दृष्टम् ।
तदद्य गोविन्दपदारविन्दं,
विलोकयिष्यामि दृशा कृतार्थः ॥४॥

([२९]आसावरी-रागे गीतम्—६)

जाएब हरिक समाजे । पाओब[३०] नयन-सुख आजे ॥
[३१]की आरे ॥ध्रुवम्॥
योगहु न जानिअ जन्ही । दिठि भरि देखब तन्ही[३२] ॥
ब्रह्मा शिव सेव जाही । काहि भजब तेजि ताही ॥
मनहि भगति लेब माँगी । समय परम-पद लागी ॥

उपवीत = जनेउ । उदीत = उदित (प्रकटित) । बैणव = बीणाक । युगत = युक्त (उपयुक्त) । तिनि जगतक = तीनू लोकक ।

(तखन मंचपर नारद प्रवेश करैत छथि)

नारद—(प्रसन्नता पूर्वक) जकरा ने महादेव ने ब्रह्मा आ ने योगी मनहुँ सँ देखने छथि ताहि श्रीकृष्णक चरण-कमल केँ आइ आँखि सँ कृतार्थ भए देखब ॥४॥

(आसावरी-राग मे गीत—६)

समाजे = सभा । दिठि = दृष्टि (आँखि) । विरमाने = विशेष अनुरक्त । पुनमत = पुण्यवान् ।

---

२५ - ब्रह्मासुत ख ग । २६ - वैधी - ख । २७ - रङ्गभूमिस्थले (अभाव) ख ग ।
२८ - मानसे कृष्णं दृष्ट्वा सहर्षं - क । २९ - नारदस्यागमनम् आसावरी रागे - क ।
३० - पाएब—ख । ३१ - (अभाव) ख । ३२ - तनी—ख ।

हिन्दुपति जिउ जाने । माहेसरि देइ विरमाने ॥
सुमति उमापति भाने । पुनमत[३३] भज भगवाने ॥

(परिक्रम्य) अहो[३४] ! इयं सत्यभामायाः सखी सुमुखी ।

सुमुखी—(प्रविश्य) अणुप्पेसिदह्मि देइए सच्चभामए, जहा एक्कंते मं अज्जउत्तो सुमरेदि, तदो[३५] गमिस्सं । [अनुप्रेषितास्मि देव्या सत्यभामया, यथा एकान्ते माम् आर्यपुत्रः स्मरति, ततो गमिष्यामि ।] (नारदं प्रति) बह्मणं णमामि, पुच्छामि अ, अहो ! णारदो वाणरो वा भवं ? [ब्राह्मणं नमामि, पृच्छामि च, अहो ! नारदो वानरो वा भवान् ?]

नारदः—भगवान्[३६] नारदोऽहं, त्वं पूर्णकामा भव । मां वानरं भणसि ? नूनमेष कोपपथानुसारी ते वचनक्रमः ।

सुमुखी—(निरूप्य) भो[३७] नारद ! अच्चरिअं !! दिव्वकइन्दो णारदो । [आश्चर्यं ! दिव्यकवी(पी)न्द्रो नारदः ।]

(घूमि केँ) इएह तँ सत्यभामाक सखी सुमुखी छथि !

सुमुखी—(प्रवेश कए) देवी सत्यभामा हमरा नियुक्त कएने छथि जे जखन एकान्त मे आर्यपुत्र (पतिदेव श्रीकृष्ण) हमर स्मरण करथि तखन नहि जाएब । (नारदक प्रति) ब्राह्मण केँ प्रणाम करैत छी आ पुछैत छी जे अपने नारद छी कि वानर ?

नारद—भगवान् नारद छी हम । तोँ मनोरथ सँ पूर्ण होअह । हमरा वानर कहैत छह ? तखन तँ ई खिसिअएबाक लेल तोहर बोल भेलहु अछि ।

सुमुखी—अओ नारद ! आश्चर्य, अपने तँ दिव्य-कइन्द छी । (प्राकृत मे कइ शब्दक कवि ओ कपि (वानर) दू अर्थ होइत अछि । कइन्द सँ कवीन्द्र ओ कपीन्द्र बुझल जाए सकैछ ।)

---

३३ - पुनमति भज - ख ग । ३४—अहो (अभाव) ख । ३५—तहा—ख ।
३६—पूर्णकामा भव—ख । ३७—निरूप्य भो नारद (अभाव) ख ।

नारदः—दिव्यकपि भणसि ? सर्वथा श्लेषकुशलासि । कथय, कुत्र श्रीकृष्णः ?

सुमुखी—सन्निहिदो ज्जेव । [सन्निहित एव ।]

दौवारिको धर्मदासः—(प्रविश्य[३८])आज्ञापयति श्रीकृष्णः, पश्य सत्यभामायाः पन्थानमिति ।

नारदः—दौवारिक ! श्रीकृष्णाय नारदं मां निवेदय ।

दौवारिकः—(श्रीकृष्णनिकटं गत्वा) देव ! द्वारि नारदस्तिष्ठति ।

श्रीकृष्णः—सत्वरमानीयताम् ।

दौवारिकः—महर्षे ! उपसर्प्यतां देवः[३९] । (इति निष्क्रान्तः ।) (नारद उपसर्पति । श्रीकृष्णः प्रणम्य देव्या सह सम्पूज्य उपवेशयति ।)

नारदः—वंशवृद्धिरस्तु ।

श्रीकृष्णः—आमोदो विशेषेण जायते । किञ्चिदुपहर्त्तव्यमानीतमस्ति ?

नारद—दिव्य-कपि (सुन्दर वानर) कहैत छह ? सब तरहेँ श्लेष-युक्त (एक पदक अनेक अर्थ लेबा मे) वाक्य बजबा मे पटु छह । कहह कतए श्रीकृष्ण छथि ?

सुमुखी—लगहि मे छथि ।

दौवारिक—श्रीकृष्णक आज्ञा अछि जे सत्यभामाक बाट देखह ।

नारद—दौवारिक (द्वारपाल) ! श्रीकृष्णक लग निवेदन करह जे हम नारद आएल छी ।

दौवारिक (श्रीकृष्णक लग जाए) देव ! द्वार पर नारद छथि ।

श्रीकृष्ण—झटदए लाबह ।

दौवारिक—महर्षि ! देवक समीप गेल जाओ (बाहर गेल)।

(नारद समीप अबैत छथि श्रीकृष्ण अपन देवीक संग प्रणाम ओ पूजा कए बैसबैत छथिन्ह ।)

नारद - वंश बढ़ओ ।

श्रीकृष्ण—महर्षि ! तीनू लोक मे विचरण करैत अपने कोनो आश्चर्य (अद्भुत बात वा वस्तु) कतए देखल अछि ?

---

३८ - प्रविश्य (अभाव) ख ।

३९ - उपसर्पतां देवम् - क ख ।

श्रीकृष्णः—महर्षे ! त्रिलोकसञ्चारिणा भवता किमाश्चर्यं कुत्र दृष्टम् ?

नारदः—भवच्चरितादन्यत् किमाश्चर्यम् ?

श्रीकृष्णः—आमोदो विशेषेण जायते । किञ्चिदुपहर्त्तव्यमानीतमस्ति ?

नारदः—श्रीस्ते वक्षसि किं देव, वाणी चास्ये स्तुतिः कुतः ।
शिवब्रह्मादिरेष्वस्य, सेवकाः के तवेतरे ॥४॥

(आसावरी-रागे गीतम्—७)

तोहेँ हरि अन्तरयामी । गुपुत करह किए स्वामी ॥
[४०]कि हरि हरि ॥ध्रुवम्॥
सुरपति देल अमूले । पारिजात एक फूले ॥
तुअ पद पूजय पाऊ । तेँ दरसन मने[४१] आऊ ॥
भगति दीअ[४२]जओँ पानी । से लेहे अमिअ सम जानी ॥
दीनबन्धु तोहेँ देवा । करय पार के सेवा ॥
सुमति उमापति भाने । पुनमत भज[४३] भगवाने ॥
हिन्दूपति जिउ जाने । माहेसरि देइ बिमाने ॥

नारद—अपनेक चरित सँ आन कोन आश्चर्य अछि ?

श्रीकृष्ण - सुगन्धि विशेष रूपेँ लागि रहल अछि ! किछु उपहार (सनेस) अनने छी की ?

नारद - लक्ष्मी अहाँक हृदये मे छथि तेँ की दिअ, अहाँक मुँह मे सरस्वती छथि तेँ स्तुति की करू, शिव ब्रह्मा आदि अपनेँक सेवक छथि तेँ आन के अपनेँक सेवक भए सकैत अछि ? ॥४॥

(आसावरी-राग मे गीत -७)

अन्तरयामी = दोसराक मनक बात बुझनिहार । गुपुत = गुप्त । सुरपति = इन्द्र । अमूले = अमूल्य । अमिअ = अमृत । विरमाने = विशेष अनुरक्त ।

---

४० - (अभाव) ख । ४१ - मन-ख ग ।

४२ - जँ-ख ग । ४३ - पुनमति भजु ख ग ।

(इति पुष्पं ददाति । श्रीकृष्णो गृहीत्वा सादरं पश्यति । सर्वे साश्चर्यं पश्यन्ति ।)

(सत्यभामा-प्रवेशकं मालव-रागे गीतम्—८)

सतभामा देवि देल परवेश । स्वामि सोहाग सोहाउनि वेश ॥
हरषित हृदय गरुअ अभिमान । कृष्णपिआरी प्राणसमान ॥
देखइत चानकलाक सँदेह । वसुधा बसु जनि बिजुरी रेह ॥
मणिमय भूषण अङ्ग अमूल । कनक-लता जनि फूलल फूल ॥
सुमति उमापति कवि परमान । पटमहिषी देवि हिन्दूपति जान ॥

(ततः प्रविशति सत्यभामा, सुमुखी च ।)

सत्यभामा - सहि सुमुहि ! सच्चं सुमरइ अज्जउत्तो ? [सखि सुमुखि ! सत्यं स्मरत्यार्यपुत्रः ?]

सुमुखी—असच्चं देइए अग्गदो कहइस्सं ? [असत्यं देव्या अग्रे कथयिष्यामि ?]

सत्यभामा— (पञ्चम-रागे गीतम्—९)

सखिहे[४४] रभसि रस चलु फुलवाड़ी ।
तहाँ मिलत मोर मदन मुरारी ॥

(ई कहि फूल दैत छथिन्ह । श्रीकृष्ण फूल लए कें सादर देखैत छथि। सभ आश्चर्य सँ देखैत छथि ।)

(सत्यभामाक प्रवेशक गीत मालवराग मे — ८)

गरुअ = गुरु (पैघ) । बसुधा = पृथ्वी पर । बिजुरी = विद्युतक रेखा । अमूल = अमूल्य । कनक-लता = सोनक लत्ती मे । सुमति = सुमन्त्री ।

(तखन सत्यभामा ओ सुमुखी प्रवेश करैत छथि)

सत्यभामा - सखि सुमुखि ! की सत्ते आर्यपुत्र (पतिदेव) स्मरण करैत छथि ?

सुमुखी —देवीक आगू असत्य कहब ?

---

४४ - रभसि चलु-क ख ।

कनक - मुकुट[४५] -माणिक भल भासा ।
मेरु - शिखर जनि दिनमणि - वासा ॥
सुन्दर नयन वदन सानन्दा ।
उगल युगल - कुवलय लय चन्दा ॥
पीत - वसन तन भूषण[४६] मणी ।
जनि नवघन उर[४७] घन - दामिनी ॥
वनमाला उर उपर उड़ारा ।
अञ्जन - गिरि जनि सुरसरि - धारा ॥
जीवन - धन - मन सरवस देवा ।
से लय करब हरिचरणक सेवा ॥
सुमति उमापति भन परमाने ।
जगमाता देवि हिन्दूपति जाने ॥

सहि सुमुहि ! उज्ज अज्जाणे अच्चरिअं आमोदो । मए वि माहवी-लदान्तरेण पेक्खम्हि, अहो कि करेदि परोक्खे अज्जउत्तो । [सखि सुमुखि ! अद्य उद्याने आश्चर्यम् आमोदः । मयापि माधवी-लतान्तरेण प्रेक्ष्यते, यथा किं करोति परोक्षे आर्यपुत्रः ।] (इति तथा करोति ।)

सत्यभामा— (पञ्चम-राग मे गीत)—९

रभसि = उत्कण्ठित भए । मदन-मुरारी = श्रीकृष्ण (कामदेव सन सुन्दर मुरारि) । मेरु-शिखर = सुमेरु पर्वतक चोटी पर । दिनमणि = सूर्य । युगल = जोड़ा । कुवलय = कुमुदिनी । दामिनी = बिजलोका । उर = छाती। वनमाला = गरा सँ ठेहुन धरिक माला । उड़ारा = उदार (प्रशस्त) । अञ्जन-गिरि = करिआ पर्वत । सुरसरि = गङ्गा । सरवस = सर्वस्व ।

सखि सुमुखि ! आइ फुलवाड़ी मे अद्भुत सुगन्धि अछि । हमहूँ माधवी-लताक ओट सँ देखैत छी जे परोक्ष मे श्रीकृष्ण की करैत छथि ।

(ई कहि तहिना करैत छथि ।)

---

४५ - मुकुट मणि भल -क ख ।
४६ - भूषण मणि-क ख । ४७ - नवघन उग दामिनी -क ख ।

श्रीकृष्ण—नारद ! किमस्य पुष्पस्य माहात्म्यम् ?

नारदः—रूपं गन्धं रसं स्पर्शं नरो यो यं समिच्छति ।
याचितं तं तदा तस्मै सर्वं पुष्पं प्रयच्छति ॥८॥

सत्यभामा - अच्चरिअं क्खु पारिजादस्स पुप्फं ! का अण्णा जेट्ठदेइं परिच्चजिअ पाइस्सदि ? [आश्चर्यं खलु पारिजातस्य पुष्पम् ! का अन्या ज्येष्ठदेवीं परित्यज्य प्राप्स्यति ?]

श्रीकृष्णः - (रुक्मिणीं प्रति) देवि ! गृह्यतामिदम् ।

रुक्मिणी - (प्रणम्य गृहीत्वा) महन्तो क्खु एसो पसादो पत्तो । [महान् खल्वेष प्रसादः प्रभुः ।]

सत्यभामा - जुत्तं एदं जेट्ठकुमारमादाए । [युक्तमिदं ज्येष्ठकुमारमातुः ।]

सुमुखी - कधं जुत्तं ? परं देई परोक्खे चिट्ठिदा । [कथं युक्तम् , परं देवी परोक्षे स्थिता ।]

रुक्मिणी - सहि मित्तसेणे ! सम्भावेहि महुस्सवम् । [सखि मित्रसेने ! सम्भावय मधू(धू)त्सवम् ।]

मित्रसेना - सहि ! सव्वधा कवव्वं, जइ देई णच्चइस्सदि । [सखि ! सर्वथा कर्त्तव्यं, यदि देवी नर्तिष्यति ।]

श्रीकृष्ण—नारद ! एहि फूलक की माहात्म्य छैक ?

नारद—जे व्यक्ति रूप, रस, गन्ध स्पर्श ओ आहि जाहि पदार्थक इच्छा करैत अछि, मङला पर ओहि व्यक्ति कें ई फूल सभ किछु दैत अछि ॥८॥

सत्यभामा—आश्चर्य थिक ई पारिजातक फूल !! जेठ रानी कें छोड़ि आन के एकरा प्राप्त कए सकैत अछि ?

श्रीकृष्ण - (रुक्मिणीक प्रति) देवि ! ई लिअ ।

रुक्मिणी - (प्रणाम कए, लए कें) ई पतिदेवक महान् प्रसाद थिक ।

सत्यभामा - जेठ कुमारक माएक लेल ई उचिते भेल ।

सुमुखी—कोना युक्त भेल ? परन्तु देवी (सत्यभामा) परोक्ष मे छी ।

रुक्मिणी - सखि मित्रसेना ! महान् उत्सव (वा वसन्तोत्सव) मनाउ ।

मित्रसेना—सखि ! सभ तरहें मनाएब, (यदि देवी रुक्मिणी) नाँची ।

रुक्मिणी - जहा आणवेदि पिअसही । [यथा आज्ञापयति प्रियसखी ।] (इति तथा करोति ।)

(राजविजय-रागे गीतम् - १०)

आज[४८] जन्म-फल भेला । सब परिहरि[४९], हरि मोहि फुल देला ॥
पुजल पुरब हमे[५०] गौरी । आसा तनि परिपूरलि[५१] मोरी ॥
उपर रहल मोर माथे । सोड़ह सहस बरनारिक साथे ॥
सुमति उमापति भाने । [५२]माहेसरि देइ हिन्दूपति जाने ॥

सत्यभामा - सहि सुमुहि ! अदो वरं किं पेक्खिदव्वं, किं सुणिदव्वं ? तदो णिवट्टस्स । आवासं जेव्व गच्छम्ह । [सखि सुमुखि ! अतः परं किं प्रेक्षितव्यं, किं श्रोतव्यम् ? ततो निवर्त्तस्व । आवासमेव गच्छावः ।]

सुमुखी - एदं ण जुत्तं देअं अदिट्ठिअ । [इदं न युक्तं देवमदृष्ट्वा ।]

श्रीकृष्णः - (एकान्ते[५३] मनसि) कथं विनेया प्रिया सत्यभामा ?

सत्यभामा - अज्जवि पिआ-सद्दो सुणीअदि ज्जेव । [अद्यापि प्रियाशब्दः श्रूयत एव ।] (उपसृत्य सगद्गदम्) जअदि ..... [जयति] (इत्यर्धोक्ते वाक्स्तम्भः । नारदं प्रणमति ।)

रुक्मिणी - प्रियसखीक जे आज्ञा । (ई कहि नृत्य करैत छथि) ।

राजविजय-राग मे गीत—१०

परिहरि = छोड़ि कें । परिपूरल = परिपूर्ण कएलनि ।

सत्यभामा - सखि सुमुखि ! एहि सँ आगू की देखब, की सुनब ? तेँ घुड़ । घरहि चलु ।

सुमुखी—देव (श्रीकृष्ण) क बिनु दर्शनहि जाएब ठीक नहि होएत ।

श्रीकृष्ण—(एकान्त मनमे प्रिया सत्यभामा कें कोना मनाएब ?

---

४८ - आज जनम मोर सुफलित भेला—ग । ४९ - परितेजि-ख ग ।
५० - हम-ख ग । ५१ - परिपूरल-ख ग । ५३ "सुमति भनु भनभाने"-ख ग ।
५२—(अभाव) ख ग ।

नारदः - स्वामिबहुमान्यतां गमिष्यसि ।

सत्यभामा - अज्जवि सा आसा ? (अद्यापि सा आशा ?)

श्रीकृष्णः - प्रिये ! इदमासनमास्यताम् ।

सत्यभामा - (सगद्गदाक्षरम्) अज्जउत्त ! दाणि ज्जेव सीरोवेअणा उप्पण्णा, तदो आवासं ज्जेव गच्छम्हि । [आर्यपुत्र ! इदानीमेव शिरोवेदना उत्पन्ना: तत आवासमेव गच्छामि ।] (इति सख्या सह निष्क्रान्ता ।)

रुक्मिणी - अज्जउत्त ! उण[५४] भोअणं कदुअ ब्रह्मणा महस्सिणा पुणीअदु । [आर्यपुत्र ! पुन भोजनं कृत्वा ब्रह्मणा महर्षिणा पूयताम् ।]

श्रीकृष्णः - एवमस्तु ।

(ततो नारदेन सख्या च समं देवी निष्क्रान्ता)

श्रीकृष्णः - (स्वगतम्)[५५]प्रत्यक्ष-विपक्षं मानसं कृत्वा सत्यभामा मां सन्तापयति । तथाहि-

---

सत्यभामा—एखनहुँ प्रियाशब्द सुनैत छी ? (लग जाए कें गद्गद कण्ठ सँ) जय हो (आधे कहैत, बोल लड़खड़ाए रुकि जाइत छनि । नारद कें प्रणाम करैत छथिन ।)

नारद— स्वामीक द्वारा बहुत मानल जाएब ।

सत्यभामा—आबहुँ से आशा ?

श्रीकृष्ण - प्रिये ! एहि आसन पर बैसू ।

सत्यभामा—(गद्गद कण्ठ सँ बजैत) आर्यपुत्र ! एखनहि माथ मे दर्द ऊठि गेल अछि, तेँ घरहि जाइत छी । (ई कहि सखीक संग बाहर भए जाइत छथि ।)

रुक्मिणी —आर्यपुत्र ! महर्षि भोजन कँए कें एहि घर कें पवित्र करथु ।

श्रीकृष्ण—एहिना हो ।

(तखन नारद ओ सखीक संग रुक्मिणी बहार जाइत छथि ।)

---

५४ - ण भोअणं कदुअ महस्सिणा - ख । ५५ - प्रत्यक्षं मानसं - ख ।

मालिन्येन मलीमसीकृतमुरः कम्पेन घोरकम्पितं

मोहेन द्रवितं विलोचनजलैः श्वासैः पुनः शोषितम् ।

निक्षिप्तं च सगद्गदेन वचसा कारुण्य-वारान्निधौ

विश्लेषेण पुन र्मदीय-हृदयं न्यस्तं हुताशे तया ॥७॥

अन्वेषयामि तावदुपवन-लतासु । (परिक्रम्य) नूनं परित्यज्यैव गता प्रिया । तदावासमेव गच्छामि । (पुनः परिक्रम्य) इदं प्रियावासद्वारम्, इयं शिशिरोपचारव्यग्रा सुमुखी । पृच्छामि तावदेनाम् । (प्रकाशम्) सुमुखि ! प्रियायाः का वार्ता ?

सुमुखी - (प्रविश्य)[५६]देव ! सेव्व पुव्वं अन्नासं वासन्ती, सम्पदं ऊणा देव्वेण किदा । [देव ! सैव पूर्वमनायासं वासन्ती, साम्प्रतम् ऊना दैवेन कृता ।]

श्रीकृष्ण—(मनहि मन) प्रत्यक्ष विरुद्ध मन कए कें सत्यभामा हमरा दुखी बनाए रहलि छथि । जेना कि—

हमरा हृदय कें ओ मालिन्य (मनकें विकृत करबा) सँ मलिन कए देलनि अछि, छातीक कम्पन सँ कँपा देलनि अछि, मोह सँ बहरायल नोर सँ द्रवित कए देलनि अछि, श्वास सँ सुखा देलनि अछि, गद्गद वाणी सँ करुणा-सागर मे फेंकि देलनि अछि, ओ पुनः अपन वियोग सँ सँ आगि मे राखि देलनि अछि ॥७॥

तावत् फुलवाड़ीक लतीक झोंझ मे तकैत छियनि। (घूमिकें) निश्चते छोड़िए कें प्रिया चलि गेलीहि ! सँ हुनक डयौढ़िअहि पर जाइत छी । (फेरि घूमि कें) ई प्रियाक आवासक दोआरि थिक आ ई ठंढइ उपचारक लेल व्याकुल सुमुखी थिकीहि । तावत् हिनकहि पुछैत छियनि । सुमुखि ! प्रियाक की समाचार ?

सुमुखी—(प्रवेश कए) उवेहु । पहिने अनायासे वसन्तोत्सव प्राप्त छल, आब भाग्यदोषें कम भए गेल ।

---

५६ - देव (अभाव) - ख ।

श्रीकृष्णः - प्रियायाः परिजनस्यापि वाणी वर्क्षेव । विशेषेण कथय ।

सुमुखी - (नाट रागे[57] गीतम् - ११)

कि कहब माधब ! तनिक विशेषे । अपनहु तनु धनि पाब कलेसे ॥
अपनुक आनन आरसि हेरी । चानक भरमे कोपि कत बेरी ॥
भरमहु निअ कर उर पर आनी । परसे तरसे[58] सरसीरुह जानी ॥
चिकुर निकर निअ नयन निहारी । जलधरजाल जानि हिय हारी ।
अपनं वचन पिकरव अनुमाने । हरि हरि तेहु परि तेजय पराने ॥
माधव ! आबहु करिअ समधाने । सुपुरुष निठुर न[59] रहय निदाने ॥
सुमति उमापति भन परमाने । माहेसरि देइ हिन्दूपति जाने ॥

ता णिवेदेमि देइए देवागमणं । [तन्निवेदयामि देव्यै देवागमनम् ।]

श्रीकृष्णः · (सत्रासम्) सुमुखि ! तथा विधेयं यथाशापयति मां देवी ।

(सुमुखी निष्क्रान्ता)

श्रीकृष्ण—प्रियाक सेवक-वर्गोक बोल टेढ़ अछि । विशेषरूपें कहू ।

सुमुखी— (नाट - राग मे गीत)—११

विशेसे = विशेष हालत । तनु = देह सँ । आरसि = अएना मे । चानक भरम = चन्द्रमाक भ्रम । निअ-कर = अपन हाथ । उर = छाती । परसे तरस = स्पर्श सँ डराइत । सरसीरुह = कमल । चिकुर-निकर = केश समूह । पिक-रव = कोइलीक स्वर । समधान = समाधान ।

सँ देवक (कृष्णक) आगमन देवी कें निवेदित करैत छी ।

श्रीकृष्ण—(डराइत) सुमुखि ! से काज करिहह जाहि सँ देवी हमरा हृदयक बात जनाबथि ।

(सुमुखी बहार भए जाइत छथि)

---

५७ - (अभाव) - ख । ५८ - परस तरस - ख । ५९—रहय न ख ।

श्रीकृष्णः—तावज्जालमार्गेण पश्यामि प्रियायाः कोपावस्थाम् । (तथा कृत्वा) हा धिक् प्रमादः !! (श्लोकः)—

बद्ध्वा शुक्लपटेन भालमखिलं हित्वा हठाद् भूषणं
प्रश्वासैः परिशोष्य शोणमधरं ग्लानं च शाश्वत्स्वरम्[60] ।
सन्तापं शिशिरोपचारनिवहैरावेदयन्ती तनोः
कोपान्मामभिषिञ्चतीव हृदयं व्यस्तं कदुष्णाश्रुभिः ॥८॥

(ततः प्रविशति यथोक्तरूपा सत्यभामा, तामववीजयन्ती सुमुखी च ।)

सुमुखी—देइ ! समस्ससिहि । [देवि ! समाश्वसिहि ।]

सत्यभामा—कि उण उवआरेहिं । [किं पुनरुपचारैः ?]

([61]सुमुखीं सम्बोध्य श्रीकृष्णं प्रति उलहन— गीतं गायति ।)

(कोलाव—रागे गीतम्— १२)

हरि[61] सओं प्रेम आस कय लाओल, पाओल परिभव ठामे ।
जलधर छाहरि तर हमे[62]सुतलिहुँ, आतप भेल परिनामे ॥

श्रीकृष्ण—तावत् खिड़की सँ प्रियाक तमसायल अवस्थाकें देखैत छी।(तहिना कए) हाय रे हमर लापरवाही !

ओ (हमर प्रिया) उज्जर कपड़ा सँ सम्पूर्ण कपार कें बान्हि कें, गहना कें हठपूर्वक त्यागि कें, श्वास सँ लाल लाल ठोर कें सुखाय कें दुखभरल स्वर कें बहओने छथि (साऽश्वत्) । ठंढाक उपचार सभ सँ शरीरक सन्ताप कें सूचित करैत क्रोध सँ हृदय-स्थित हमरा गर्म गर्म नोर सँ जेना नहबैत होथि ॥८॥

(तखन पूर्वोक्त रूपमे सत्यभामा ओ हुनका हौंकैत समुखी प्रवेश करैत छथि ।)

सुमुखी—देवि ! धैर्य धरू ।

सत्यभामा—उपचार सभ सँ की ? (समुखीकें सम्बोधित कए श्रीकृष्णक प्रति उलहनगीत गबैत छथि ।)

६०- साश्वत् - ख क । ६१ - सौं—ख ग । ६२ - हम सुतल हु- ख ग ।

सखि हे ! मन जनु करिअ मलाने ।
अपन करम फल हमे उपभोगब, तोहेँ किअ[६३] तेजह पराने ॥ध्रुवम्॥
पुरुब-पिरिति रिति हुनि जञो विसरल,[६४]तथिहु न हुनकर दोसे ।
कतेक जतन धरि जञो परिपालिअ, साप न मानब पोसे ॥
कबहु नेह पुनु नहि पागासब, केवल फल अपमाने ।
बेरि सहस दस अमिञो [६५] भिजाबिअ, कोमल न होअ पखाने ॥
गुरु उमापति भन,[६६] पहु देब दरसन, मान होएत समधाने [६७] ।
सकल-नृपतिपति हिन्दूपति जिउ, महारानि[६८] विरमाने ॥

अलं दाव जीविअ-दुब्बलाआसेण । [अलं तावज्जीवित-दुर्बलाया-सेन ।]

(सत्यभामा[६९] कृष्णमधिकृत्य पुनः सुमुखीं प्रति उपहासगीतं गायति ।)

(विभास-रागे गीतम्- १३)

[७०]सहस्र-पूर्ण-शशि, रहुओ गगन बसि, देओ[७१] दशओ दिस दन्दा ।
भरि बरिसओ विस, बहुओ दशओ दिश, मलय समीरन मन्दा ॥

कोलाव-राग मे गीत—१२

परिभव = अपमान । जलधर = मेघक । आतप = रौद । परिनामे = परिणाम (फल) । मलाने = म्लान (दुखी) । रिति = रीति । अमिअ = अमृत । पखाने = पाषाण (पाथर) । परसन = प्रसन्न । अवसान = समाप्त । हिन्दूपति जिउ = हिन्दूपतिजी । विरमाने = विशेष अनुरक्त ।

प्राणक हेतु ई दुर्बल प्रयास व्यर्थ थिक ।

(सत्यभामा कृष्णक विषयमे सुमुखीक प्रति उपहासगीत गबैत छथि ।)

विभास-राग मे गीत — १३

पूर्णशशि = पूर्णिमाक चन्द्रमा । गगन = आकाश । दन्दा = द्वन्द्व (खींचा-तानी) । विस = विष । मलय-समीरन = मलयपर्वतक बसात । हिन = हीन ।

६३ - किअ श ग । ६४ - विसरब तइओ न हुनकर श । ६५ - बेरि सहस्र दश अमिअ श ग । ६६ - गुरुउमापति हरि होएत परसन- श । ६७ - अवसाने श । ६८ - माहेसरि देइ क । ६९ - (पंक्तिक अभाव)- श । ७० - सहस पुनिमा शशि- क । ७१ निसि-बासर देओ — क ।

साजनि ! आब जीवन कोन काजे ।
पहु मोहि हिन करु, अपयश जग भरु, सहब न पाबिअ लाजे ॥
॥ध्रुवम्॥
कोकिल अलिकुल, [७२]कलरबेँ आकुल, करओ दहओ दुहु काने ।
[७३]सिरिस-सुरभि जत, देह दहओ तत, हनओ मदन[७४] सतबाने ॥
[७५]कवि उमापति भन, हरि होएत परसन, मान होएत समधाने ।
सकल- नृपतिपति हिन्दूपति जिउ, पटमहिषी विरमाने ॥

(इति मूर्च्छति ।)

श्रीकृष्णः— हा धिक् ॥ ईदृशी दशा ? सन्देहे[७६] पातिता मया । तदुपसर्पाम्येनाम् । (इत्युपसर्पति । सखीं संज्ञया निवार्य विज्ञापयित्वा चरणतलं परामृशति ।)

सत्यभामा— (ससंभ्रम्) सहि सुमुहि ! अण्णारिसो ज्जेव अज्ज दे करप्फसो । [सखि सुमुखि ! अन्यादृश एव अद्य ते करस्पर्शः ।] (नयने उन्मील्य श्रीकृष्णं दृष्ट्वा अवगुण्ठ्य उपविशति ।)

अलिकुल = भौंराक समूह । सतबाने = सैयो बाण । सिरिस-सुरभि = शिरीषक फूलक सुगन्धि । मदन = कामदेव । हनओ = मारओ ।

(ई कहि मूर्च्छित होइत छथि)।

श्रीकृष्ण—हाय ! एहन दशा मे प्रियाकेँ उपस्थित कए देल हम ! तखन हिनक समीप जाइत छी । (ई कहि लग जाइत छथि । सखी केँ इशारा सँ रोकि केँ निवेदन कए पाएर जँतैत छथि ।)

सत्यभामा—(होश मे आबि)सखि सुमुखि ! आइ तोहर स्पर्श आने तरहक लगैत अछि । (आँखि खोलि श्रीकृष्णकेँ देखि घोघ तानि बैसैत छथि) ।

७२ - करय वेआकुल - श ग । ७३ - सिसिर - क श ग । ७४ - सहओ — श । ७५ - सुकवि उमापति हरि — क श ग । ७६ - सन्देहे (अभाव) — श ।

श्रीकृष्णः – (बद्धाञ्जलिः) प्रिये ! प्रसीद मानिनि !

(मालव – रागे[७७]मानिनीगीतम् – १४)

[७८]ओ गे मानिनि ॥ध्रुवम्॥

अरुणपुरुब दिशा[७९], बहुलि सगरि निशा[८०], गगन[८१]मगन भेल चन्दा ।
[८२]मुँदि गेलि कुमुदिनि, तइओ तोहर धनि, मूँदल मुख अरविन्दा॥१॥

(एतस्मिन् अर्थे श्लोकः)

रुचि गलति कौमुदी, शशिनि कौमुदो हीयते
वदन्ति कलमन्वतः शृणु समन्ततः कुक्कुटाः ।
पुरो दिगतिरोहिता परि तिरोहितास्तारकाः
कथं तव वरोरु ! हे ! मुखसरोरुहे मुद्रणम् ॥९॥

ओ गे मानिनि !

कमल वदन, कुवलय दुहु लोचन, अधर मधुरि निरमाने ।
सगर सरीर कुसुम तुअ सिरिजल, किए तुअ हृदय पषाने ॥२॥

श्रीकृष्ण—(कल जोरि) प्रिये ! प्रसन्न होउ मानिनि !

मालव-राग मे गीत—१४

अरुण = सूर्य । बहुलि = बहि गेल (बीतलि) । सगरि निशि = सम्पूर्ण राति । गगन = आकाश मे । कुमुदिनि = चन्द्रक अस्त भेलापर कुमुदिनी संकुचैछ ओ सूर्यक उगला पर कमल फुलाइछ । अरविन्दा = कमल ॥१॥

(एहि पदक अर्थ मे श्लोक)—

कुमुदक (पानि मे फुलाइवला एक उज्जर फूलक) कान्ति क्षीण होइत अछि, चन्द्रमा मे प्रकाश कम भए रहल अछि, आखिर सबतरि मुर्गा बजैत अछि से सुनू, पूब दिस अत्यन्त लाल भए गेल, तारा सभ लुप्त भेल, तथापि हे वरोरु (सुन्दर जाँघवाली) अहाँक मुँहरूपी कमल मुनएले किएक अछि ?

---

७७ – मानिनी (अभाव) – हा ग । ७८ – (अभाव) – क ख । ७९ – दिशि – हा ग । ८० – निशि – हा ग । ८१ – गगन मलिन – ख । ८२ – मुनि – हा ग ।

(एतस्मिन् अर्थे श्लोकः)

आस्यं ते सरसीरुहेण रचितं, नीलोत्पलाभ्यां दृशौ,
बन्धूकेन रदच्छदौ, तिलतरोः पुष्पेण नासापुटम् ।
इत्येवं विधिना विधाय कुसुमैः सर्वं वपुः कोमलं
क्रूरं मानसमश्मना पुनरिदं कस्मादकस्मात् कृतम् ॥१०॥

ओ गे मानिनि !

असकति कर कङ्कण नहि परिहसि, हृदय हार भेल भारे ।
गिरिसम गरुअ मान नहि मुञ्चसि, अपरुब तुअ बेवहारे ॥३॥

(एतस्मिन् अर्थे श्लोकः)

कान्ते किं तव कञ्चुकं न कुचयो र्नो हस्तयोः कङ्कणं
दोर्वल्ली वलयावलीमपि न दौर्बल्येन विन्यस्यसे ।
हारं भारमिवापधारयसि चेदेवं गुरुं मेरुवद्
मानं मानिनि ! किं न मुञ्चसि मनाक् तं भावमावेदय ॥११॥

ओ गे मानिनि !

अवगुन परिहरि हरषि हेरु धनि, मानक अवधि बिहाने ।
हिमगिरि कुमरि चरण हृदय धरि, सुमति उमापति भाने ॥४॥

कमल वदन = कमल सँ मुँहक निरमाने = निर्माण भेल अछि । कुवलय = कुमुदिनी सँ । मधुरि = माधुरी फल सँ । पषाने = पाषाण = पाथर ॥२॥

(एहि पदक अर्थ मे श्लोक)—

अहाँक मुँह (आस्य) कमल सँ बनल अछि, नील कमल सँ दूनू आँखि, मधुरीक फूल सँ (बन्धूकेन) दुनू ठोर, तिलक फूल सँ नाक बनल अछि—एहि तरहेँ फूलहि सँ सम्पूर्ण देह कोमल बनाए ई निष्ठुर मन पाथर सँ एकाएक कोना बनाओल गेल ? ॥१०॥

असकति = अशक्ति (आलस्य सँ) । परिहसि = पहिरैत छी । गरुअ = भारी । मुञ्चसि = छोड़ैत छी । अपरुब = अपूर्व ॥३॥

(एहि पदक अर्थ मे श्लोक) –

[८३]प्रिये ! क्षम्यतामयमेको ममापराधः । अथवा,

(केदार-रागे गीतम् १५)

मानिनि! मानह जओं मोर दोस[८४]सासि करह बरु न करह रोस[८५]।।
भौंह कमान बिलोकन बान । बेधह बिधुमुखि ! कय समधान ।।
पीन पयोधर गिरिवर साधि । बाहु फाँस धनि ! बरु मोहि बाँधि ।।
[८६]की परिनति भय परसनि होहि । भूषण चरण-कमल देहे मोहि ।।
सुमति उमापतिभन परमान । जगमाता देइ हिन्दूपति जान[८७] ।।

(ततः[८८] सत्यभामां प्रणम्य उत्थाय श्रीकृष्णः तां प्रति विलास-गीतं गायति ।)

हे सुन्दरि ! अहाँक स्तन पर वस्त्र किएक नहि अछि, हाथ मे कगना ओ बाँहिरुपी लत्ती मे सोनाक चूड़ीक (वलय) पाँती सेहो कमजोरीक कारणें नहि सजबैत छी, हार (मोतीमाला) कें भार जकाँ बुझैत छी, तँ एहि तरहें सुमेरु पर्वत सनक भारी मान कें थोड़बो किएक नहि छोड़ैत छी ? हे मानिनि ! ताहि आशय कें प्रकाशित करू ।।११।।

अवगुन = दोषकें । परिहरि = छोड़िकें । हेरु = देखू । मानक अवधि बिहाने = मान करबाक समय भोरे तक रहैछ । हिमगिरि कुमरि = पार्वती।।४

प्रिये ! हमर एकटा एहि अपराध कें क्षमा करू । अथवा—

केदार-राग मे गीत — १५

शासित = शासन । रोस = तामस । पीन = पुष्ट । पयोधर-गिरिवर साधी = स्तनरुपी पहाड़ मे साधिकें । कोप-बिरत = तामस कें शान्त कए। परसनि = प्रसन्ना । भूषण = गहनाक रूप मे अपन चरण-कमल दएहु ।

(तखन सत्यभामा कें प्रणाम कए ऊठि कृष्ण हुनका प्रति विलासगीत गबैत छथि) ।

८३ - (पंक्तिक अभाव) - ख ग । ८४ - दोसे - ख । ८५ - ख - (सकल चरणक अन्त्य गुरु) शासित करिअ बरु न करिअ रोसे । ८६ - कोप प्रणय - ख । ८७ - माहेसरि देइ बस पुर अभिमाने - क । ८८ - सत्यभामा - (प्रणम्य उत्थाय) - (केदार रागे - गीतसं० - १७) - ख ग ।

(गीतम्—१६)

[८९]तोहें धनि! राजकुमारी, कुसुमहु तह सुकुमारी, बरनारी लो ।।
नयन देहे जल ढारी, मोहि बरु हलह निहारी, करें मारी लो ।।
तोहें मोहि हिरमनिहारी, अमिञ्‍ा-भरलि जनि झारी, भय मारी लो।।
उमानाथे रिति परचारी, तुअ बस भेलहु बिचारी, परचारी लो ।
हिन्दूपति जिउ जाने, महारानि बिरमाने, बिद्यमाने लो ।।

सत्यभामा—(श्रीकृष्णं प्रति)—

(केदार-रागे गीतम्—१७)

ताहि अवसर ताहिठाम । माधव! किए तोहे लेल मोर नाम ।।
आब कि करब परकार । माधव ! अपयश भरल संसार ।।
सबहु पाओल अवकास । माधव ! जग भरि भेल उपहास ।।
कोने परि सखिसभे साथ माधव ! उपर करब हम माथ ।।
जाहि देखि हसलिहु कालिह । माधव ! से आबे[९०] करति करतालि।
[९१]परम करम मोर वाम । माधव! सकल[९२] तकर परिनाम ।।
सुमति उमापति भान । माधव ! सुपहु करब समधान ।
हिन्दूपति जिउ जान । माधव ! माहेसरि देइ बिरमान ।।

(इति मूर्च्छति ।)

गीत—१६

कुसुमहु तह = फूलहु सँ अधिक । अमिञा = अमृत ।।

सत्यभामा—(श्रीकृष्णक प्रति)

केदार-राग मे गीत—१७

ताहि अवसर = गीतसं० १०क बाद । परकार = उपाय । अवकाश = अवसर (उपहास करबाक) । करतालि = थपड़ी (हँसी उड़ाओत) । वाम = विपरीत

८९ - (अभाव) - ख ग । ९० - आबे बेलि ख ।
९१ - परम - ख । ९२ - सकल तनिक - ख ।

श्रीकृष्णः—(उत्थाप्य) प्रिये ! समाश्वसिहि, समाश्वसिहि ।

सत्यभामा—(आश्वस्य) अज्जउत्त ! आसासो वि मे[६३] लज्जाअरो । [आर्यपुत्र ! आश्वासोऽपि मे लज्जाकरः ।]

श्रीकृष्णः—प्रिये ! प्रसीद । स्फुटमाज्ञापय । कथं ते मानः[६४] समाधातव्यः ?

भुवनं समये दयादृगन्तः
त्वयि, युक्तो मयि ते दयादृगन्तः ।
भवतीं न विना परास्तभावः
कुपितायां त्वयि मे परास्तभावः ।।१२

(श्री[६५]कृष्णः सत्यभामां प्रति गीतं गायति—)

(गीतम्—१८)

[६६]केसरि तिलक कयल निरमान । चाँद कुमुद लय पूजल काम ।।
धने धने !! तुअ अनुरुप सिनेह[६७], सुन्दरि ।।ध्रुवम्।।

समधान = समाधान । हिन्दु पतिजिउ = हिन्दूपतिजी। (मूर्च्छित होइत छथि।)

श्री कृष्ण—(उठि कें) प्रिये ! मोन थीर करू ।

सत्यभामा—(शान्त भए) आर्यपुत्र ! आश्वासनो हमरा लेल लज्जाजनक थिक।

श्री कृष्ण—प्रिये ! प्रसन्न होउ । साफ साफ आज्ञा दिअ। कोना अहाँक मानक समाधान होएत ।

अहाँक रहला पर दयादृष्टिक हृदयवला हम संसार कें शान्त करैत छी, अतः हमरा प्रति अहाँक दयादृष्टिक छोड़ (कृपाकटाक्ष) उचित थिक। अहाँक विना हम परास्त नहि भए सकैछ छी (अर्थात् अहीं टा सँ परास्त होइत छी), किन्तु अहाँक तमसएला पर हमरा दोसराक (अन्य नायिकाक) विषय मे भाव अस्त भए जाइछ ।।१२।।

(श्रीकृष्ण सत्यभामाक प्रति गीत गबैत छथि—)

गीत—१८

केसरि = केशर जकर रंग पिरोछ होइछ। चाँद = चन्द्रमाकें । धने = धन्य ! अलक = केश मे । नखतक = नक्षत्रक, ताराक । बेनी = जुट्टी । बिरचि

६३ मलज्जाअरो ख। ६४ मनः । ६५ (पंक्तिक अभाव) ख । ६६ (गीतक अभाव) ख ६७ तुअ रुप मन अनुरूप सुन्दरी क।

अलक झलक मुकुतावलि काँति। जनि जलधर तर नखतक पाँति ।।
बेनी बिरचि सीस फुल देल । जनि फणिपति सिर मणि उगि गेल।।
बेसरि मोति झलक मुखइन्दु । उमगि अमिञा-रस गर जनि बिन्दु।।
[६८]पदक-हार कुच-सिर परु टारि । मुखशशि हेरि मेरु छिठि वारि।।
उरवसि रसिक उमापति भान । लखिमा देइ पति ई रस जान ।।

सत्यभामा—(सुमुखीमधिकृत्य[६९] कृष्णं प्रति) –

(मल्लार[१]-रागे गीतम्—१९)

माधव ! करहु हमर समधाने । देहे[२] मोहि पारिजात तरु दाने ।।
एहिखन तोरित करहु परथाने[३] । नहि तञो[४] हमर अवस अवसाने।।
एहि पर हमर पुरल अभिमाने । हम[५] तह सहि नहि होअ अपमाने ।।
सुमति उमापति भन परमाने । पटमहिषी देइ हिन्दूपति जाने ।।

श्रीकृष्णः—(दौवारिकं प्रति[६]) धर्मदास दौवारिक ! देवीगृहान्नारदमत्रानय ।

(नेपथ्ये—यथाज्ञा राज्ञाम् ।)

= बनाए । फणिपति = सर्पराजक । बेसरि = नाकक भूषण मे मोती झलकैत लगैत अछि जे मुखरूपी चन्द्रमा जेना उछलि कें अमृतक बिन्दु चुअबैत हो।

सत्यभामा—(सुमुखी कें कहैत कृष्णक प्रति) –

मल्लार-रागमे गीत - १९

समधाने = समाधान । तोरित = तुरत।परथाने = प्रस्थान । अवस = अवश्य । अवसान = अन्त (मृत्यु)। हम तह = हमरासँ वा हेम तह = बर्फ समान।

श्रीकृष्ण - धर्मदास दौवारिक ! देवीक(रुक्मिणीक) घर सँ नारद कें एतए बजाए लाबहु ।

(नेपथ्य मे- राजाक जे आज्ञा ।)

६८ (पंक्तिक अभाव) ग । ६९ (पंक्तिक अभाव ख ।
१ (पंक्तिक अभाव) ख । २ देह ख ग । ३ त्वरित करहु पयाने ख ।
४ तह ख । ५ हेमत हसहि ख । ६ दौवारिकप्रति (अभाव) ख ।

नारदः (प्रविश्य) अनुजानीहि मां पुरन्दरपुरगमनाय ।

श्रीकृष्णः—एवं भवता मद्वचसा पुरन्दरो वाच्यः—

(श्लोकबद्ध* नारदहस्तेन श्रीकृष्णः पुरन्दरं प्रति आत्मवाक् प्रेषयति ।)

पुरन्दर ! प्रेषय पारिजातं पश्यन्तु वध्वस्तव साभिलाषाः ।
पुलोमकन्याकुचकुङ्कुमाक्तं[8] भिनत्तु मा शार्ङ्गशरस्तवोरः ॥१३॥

(नारदं प्रति) शीघ्रं प्रत्यागम्यताम्[9] ।

नारदः- तथा । (इति निष्क्रान्तः ।)

श्रीकृष्णः— धर्मदास ! प्रातर्गत्वा धनञ्जयं ब्रूहि, सज्जीभवतु भवानमराधिप, समराय । अन्यदपि, सुभद्रा प्रियाश्वासनाय प्रेषणीया ।

(नेपथ्ये – यथा देवाज्ञा ।)

नारद - (प्रवेश कए) इन्द्रक नगर जएबाक हमरा आज्ञा देल जाए ।

श्रीकृष्ण - अपने हमर समाद इन्द्रकें एहिरूपें कहबैन्ह-

(श्लोकबद्ध अपन उक्ति नारदक हाथें इन्द्रक प्रति पठबैत छथि ।)..

हे इन्द्र ! पारिजात पठाउ । ताहि लेल उत्कण्ठित अहाँक भावहु लोकनि (श्रीकृष्णक स्त्रीगण) देखथु । पुलोमाक कन्या (शची = इन्द्रक पत्नी) क स्तनक कुंकुम सँ लिप्त अहाँक छातीकें शार्ङ्गक (श्रीकृष्णक धनुषक) तीर जनु बेधए(अर्थात् जँ पारिजात नहि पठाएब तँ छाती बेधल जाएत से जानब)।१३।

(नारदक प्रति) झट दए आएब ।

नारद—बेस । (बहार भए गेलाह) ।

श्रीकृष्ण – धर्मदास ! भोरे जाए कें अर्जुन कें कहिऔन्हु -अहाँ इन्द्र सँ युद्धक हेतु तैयार होइ' । दोसरो बात, जे सुभद्रा कें प्रियाक(सत्यभामाक) आश्वासनक हेतु पठा देथि ।

(नेपथ्यमे—जे सरकारक आज्ञा ।)

---

७ (पंक्तिक अभाव) ख । ८ माञ्चितं - क ख ग ।

९ (अभाव) ख ।

(ततः प्रविशति सुभद्रा)

सुभद्रा[10]—(सत्यभामां प्रति) सहि सच्चभामे ! समास्ससिहि, समास्ससिहि अवणइस्सदि दे मण्णुं अज्जो । [सखि सत्यभामे ! समाश्वसिहि, समाश्वसिहि । अपनेष्यति ते मन्युम् आर्यः ।]

श्रीकृष्ण – कथं चिरायते नारदः ?

नारदः– (प्रविश्य कृष्णं प्रति)

यत्र मोहवशात् कृष्ण ! ब्रह्मा शम्भुश्च मुह्यतः[11] ।
लोकेश-श्रीमदान्धस्य तत्र शक्रस्य का कथा ॥१४॥

परमनुग्रहीतव्यः श्रीकृष्णेन[12] मदापनोदेन ।

श्रीकृष्णः[13]—नारद ! कथय, कथय ।

नारदः—(उपसृत्य) श्रीकृष्ण ! इदं प्रत्युत्तरितं पुरन्दरेण—

पारिजातदलं यावच्छूचिकाग्रेण विद्ध्यते[14] ।
तावत् कृष्ण ! विना युद्धं मया तुभ्यं न दीयते ॥१५॥

(तखन सुभद्रा प्रवेश करैत छथि)

सुभद्रा - (सत्यभामाक प्रति) सखि सत्यभामा ! स्थिर रहु, अहाँक कोपकें आर्य दूर करताह ।

श्रीकृष्ण - नारद देरी किएक कए रहल छथि ?

नारद-- (प्रवेश कए) जाहि श्रीकृष्णक लग ब्रह्मा ओ महादेव सेहो मोह सँ अप्रकृतिस्थ भए जाइत छथि ततए तीनू लोकक आधिपत्यक लक्ष्मीक मद सँ अन्ध भेल इन्द्रक तँ कथे कोन ? ।।१४।।

मुदा, मद हटाए कें श्रीकृष्णक प्रति अनुग्रह करब उचित छलन्हि । (लग जाए) श्रीकृष्ण ! इन्द्र ई उत्तर देलन्हि अछि:"पारिजातक पातकें जतबा सुइयाक नोक सँ बेधि सकैत छी ततबो अंश हे कृष्ण ! बिनु युद्धें हम अहाँकें नहि दए सकैत छी ।।१५।।

---

१० (सुभद्राक उक्तिक अभाव) ख ।११ मुह्यते - क ख ग ।

१२ श्रीकृष्णो ख । १३ (अभाव) ख । १४ भिद्यते क ।

श्रीकृष्णः—तर्हि अनुभवतु फलं नारद ! वैमुख्यस्य । अयमहमिदानीं मनसा विहङ्गमराजम् स्मरामि । दक्ष धनञ्जय ! पारिजाततरुं हरामि, इन्द्रमदं चापवारयामि । प्रिये ! अनुजानीहि ।

सत्यभामा—किदकज्जो णिवट्टस्स, सिग्घं आणन्दप्पउत्तिहरो पेसिदव्वो । [कृतकार्यो निवर्त्तस्व । शीघ्रमानन्दप्रवृत्तिहरः प्रेषितव्यः ।]

श्रीकृष्णः—अयं नारदो निवेदयिष्यत्यागत्य कार्यसिद्धिम् ।

नारदः—उत्कण्ठते मे लोचनं भ्रातृपुत्र-सङ्ग्रामदर्शनाय ।

(श्रीकृष्णो धनञ्जय-नारदाभ्यां समं पारिजातहरणाय निष्क्रान्तः ।)

सत्यभामा—सहि सुहद्दे ! अवि णाम किदकज्जो अज्जउत्तो झत्ति पडिणिवट्टिस्सदि[१५] ? [सखि सुभद्रे ! अपि नाम कृतकार्य आर्यपुत्रो झटिति प्रतिनिवर्तिष्यति ?]

सुभद्रा—अध इं ? [अथ किम् ?]

सत्यभामा—   (मालव-रागे गीतम्—२०)

प्रथमहि ओ रे,
कुसुम-रचित एक तलपहु, की अलपहु ।
बिरह-बेआकुल छल पहु ॥

श्रीकृष्ण - तखन नारद ! विमुख होएबाक फळ भोगथु । इएह हम एखन मनसँ पक्षिराज (गरुड़) केँ बजबैत छियन्हि । दक्ष (युद्ध मे पटु) अर्जुन ! पारिजातक गाछकेँ हरण करैत छी, आ इन्द्रक मद केँ दूर करैत छी । प्रिये ! आज्ञा दिअ ।

सत्यभामा--कर्त्तव्य पूर्ण कए घुरू । जल्दी आनन्दमय समाचार देनिहार केँ पठाउ ।

श्रीकृष्ण-- इएह नारद आबि केँ कार्यसिद्धिक सचामार सुनओताह ।

नारद-- हमर आँखि भातिजलोकनिक युद्ध देखबा लए उत्कण्ठित अछि ।

(श्रीकृष्ण अर्जुन ओ नारदक संग पारिजात-हरणक हेतु प्रस्थान कएल) ।

सत्यभामा-- सखि सुभद्रे ! की आर्यपुत्र कार्यसिद्धि कए झटदए घुरताह ?

सुभद्रा— त आओर की ?

१५—पड़िणिअट्टिस्सदि—क ख ।

तन्हि[१६] बिनु ओ रे,
नयन बरिस[१७] जलधर सन, की परसन ।
कतिखन देत बिहि दरसन ॥
उपवन ओ रे,
पिक पञ्चम कर जनु सर, की अनुसर ।
मार मदन धरि[१८] धनु-सर ॥
सुनु धनि ओ रे,
सुमति उमापति भन मत, की धन मत ।
सुपहु मिलत रस जनमत ॥

सहि सुहद्दे ! वामं णअणं मे परिप्फुरदि । [सखि सुभद्रे ! वामं नयनं मे परिस्फुरति ।]

सुभद्रा सहि ! पेक्ख, णारदो संपत्तो । [सखि ! प्रेक्षस्व, नारदः संप्राप्तः ।]

नारदः—(प्रविश्य) देवि ! दिष्ट्या वर्धसे, जितं श्रीकृष्णेन, हृतश्च[१९] पश्चात् पारिजाततरुः ।

सत्यभामा--   (मालव- राग मे गीत)- २०

तलपहु = तल्प (ओछाओन) पर । अलपहु = अल्पहु (थोड़बो) । पहु = प्रभु (पति) । परसन = प्रसन्न । बिहि = बिधाता । पिक = कोइली । सर = स्वर । मार मदन = कामदेव मारैत छथि (मार' पद मे श्लेष अछि जकर (१) मारब ओ (२) कामदेव अर्थ होइछ । मदन शब्दक संग प्रयुक्त भेला सँ पुनरुक्तवदाभास अलंकार भेल ॥

सखि सुभद्रे ! हमर बामा आँखि फडकैत अछि । (ई शुभक लक्षण थिक) ।

सुभद्रा-- सखि ! देखू, नारद आबि गेलाह ।

नारद-- (प्रवेश कए) देवि ! भाग्यक जोड़गरि छी । श्रीकृष्ण जितलाह, पाछू पारिजातक गाछ हरण कए लेलन्हि ।

१६—तनि - ख । १७—बरसि—ख । १८- धनि - ख ग । १९—हृतः - ख ।

सत्यभामा—इदं दाव पारिजादस्स ओच्छाहिअं गेण्ह (इति हारं ददाति ।) भअवं ! णिवेदेहि समासेण समर-जअ वुत्तन्तो । [इदं तावत् पारिजातस्य औत्साहिकं गृहाण । भगवन् ! निवेदय समासेन समर-जयवृत्तान्तम् ।]

नारदः—अहो ! निर्दयं प्रहारः परस्परं भ्रातृपुत्राणाम् !!

(वसन्त-रागे गीतम्—२१)

आ रे[२०] ॥

ऐरावत असवार पुरन्दर, घन-भूषण धनु हाथे ।
सहस्र तुरग चढ़ि चलल धनुर्धर, तनय जयन्तक साथे ॥

आ रे[२१] ॥ध्रुवम॥

भाइ-भाइ रण भेल भयङ्कर, गजवर गरुड़ दुरन्ता ।
अचरज देखय देवगण[२२] आयल, गिरिश[२३] गोरि परजन्ता ॥
सारंग-सर सुरपति उर बेधल, गाण्डिव-पाणि जयन्ता ।
ठामहि ठोर ठोकि विनतासुत भांगल[२४] दिग्गज दन्ता ॥
पारिजात तरु गरुड़ चढ़ाओल, हरि करकमल उपाड़ि ।
सबकाँ शिव पुनु कयल समञ्जस, आयल मुदित मुरारि ॥

सत्यभामा- पहिने ई पारिजातक (प्राप्तिक) इनाम लिअ । (हार दैत छथिन्ह) । भगवन् ! संक्षेप मे विजयक वृत्तान्त कहू ।

नारद- ओह ! अपन भातिज- लोकनिक निर्दय प्रहार केहन छल !!

वसन्त राग मे गीत-- २१

पुरन्दर = इन्द्र । धन-भूषण = मेघक गहना । तुरग = घोड़ा । तनय जयन्तक = अपन पुत्र जयन्तक (इन्द्रक पुत्र जयन्त छलथिन्ह) । गजवर = ऐरावत हाथी ओ गरुड़ जनिक वीरताक अन्त नहि, ताहि दुनू मे रण भेल । गिरिस गोरि परजन्ता = महादेव ओ गौरी पर्यन्त । सारंगसर = श्रीकृष्ण ।

२०—(अभाव) - ख ग । २१—(अभाव) - ख ग । २२ - देवमुनि - क । २३—गिरि हरें गिरिस - ख । २४—भागल—ख ग ।

सकल-यवन-वन वर-दावानल, दशम देव अवतारा ।
सकल-नृपति-पति हिन्दूपति जिउ[२५], सब रस जाननिहारा ॥

(ततः प्रविशति सपारिजातो गरुडारूढः श्रीकृष्णः, अश्वारूढो धनञ्जयः ।

श्रीकृष्णः—प्रिये ! गृह्यतामयं पारिजाततरुः ।

धनञ्जयः—सखि सत्यभामे ! सम्प्रति सर्वासां मानवतीनां मूर्द्धनि विराजसे ।
यतः—

अयं रोगशोकादिकं नाशयित्वाऽर्थिनां दर्शनात् सर्वमर्थं ददाति ।
स ते स्नेहतो माधवेनोपनीतो महापुण्यभूमिस्तरुः पारिजातः ॥१६॥

तदुपगीयताम् ।

सत्यभामा—(प्रणम्योत्थाय)—

(राजविजय—रागे गीतम्—२२)

जय जय पारिजात तरुराज । पाओल पुरुव-पुने[२६] दरसन आज ॥

सुरपति = इन्द्रक छाती बेधिदेल । गाण्डिवपाणि = अर्जुन जयन्तक छाती बेधल । विनतासुत = गरुड़ । समञ्जस = मेल । सकल-जवन = सम्पूर्ण यवन् रूपी वनक हेतु जंगली आगि ॥

(तखन पारिजात सहित गरुड़ पर चढ़ल श्रीकृष्ण ओ घोड़ा पर चढ़ल अर्जुन प्रवेश करैत छथि ।)

श्रीकृष्ण—सखि ! इएह लिअ पारिजातक गाछ ।

धनञ्जय-- सखि सत्यभामे ! आब तों एखन अहाँ मानवती सभक ऊपर शोभित भए रहलि छी । किएक तँ—

ई पारिजात रोग-शोक इत्यादि केँ नष्ट कए दर्शनमात्र सँ इच्छुक व्यक्ति केँ सभ वस्तु दैत अछि । से महापुण्यक आश्रम पारिजातक गाछ अहाँ केँ स्नेहपूर्वक श्रीकृष्ण देलनि अछि ॥१६॥

तेँ गीत गाउ ।

सत्यभामा — (प्रणाम कए उठि)

राजविजय- राग मे गीत-- २२

पुरुव-पुन = पूर्वक (पहिलुका) पुण्य सँ । सर्गक भूषण = स्वर्गक शोभा ।

२५—पति—ख । २६ - पुन - ख ग ।

सरगक भूषण गुणक निवास । सुरहुक[२७] तोहें परिपूरल आस ॥
सेवक सब तुअ दानव देवा । मानवे[२८] जानब की तुअ सेवा ॥
सुरपति निअ कर करथि किआरी । सची देथि सुरसरि-जल ढारी॥
सुमति उमापति भन परमाने । माहेशरि देइ हिन्दूपति जाने ॥

नारदः—सत्यभामे ! जनासि ? पारिजाततटे दत्तमक्षयं भवति । तदारोपय-
तामङ्गणे ।

श्रीकृष्णः—एवमस्तु ।

(इति सर्वे रोपयन्ति ।)

श्रीकृष्णः—धनञ्जय ! बहिरनुगम्य राजराजं विसर्ज्यागच्छ ।

(ततस्तथा कृत्वा पद्भ्यामेव प्रविशतः ।)

सत्यभामा - नारद कि दिज्जो ? [नारद ! किं देयम् ?]

नारदः - प्रियः पदार्थः ।

सत्यभामा - सो को उण अज्जउत्तादो अण्णो ? [स कः पुनरार्यपुत्रादन्यः ?]

श्रीकृष्णः - प्रिये ! प्रभवसि मयि, देहि मां ब्राह्मणाय ।

(सत्यभामा लज्जते ।)

दानव देवा = दैत्य ओ देवता सेवक अछि । निअ-कर = अपना हाथें । सची = इन्द्रक पत्नी शची । सुरसरि = गङ्गाक ॥

नारद-- सत्यभामे ! जनैत छी ? पारिजातक तर मे दान देल अक्षय होइत छैक । तें आङन मे रोपू ।

श्रीकृष्ण-- एहने होअओ । (सब केओ रोपैत छथि ।)

श्रीकृष्ण-- अर्जुन ! बाहर जाए अरिआति कें कुबेर कें बिदा कए आउ ।

(तखन तहिना कए पएरहि दुनू गोटा- अर्जुन ओ श्रीकृष्ण प्रवेश करैत छथि) ।

सत्यभामा--नारद ! की दिअ ?

नारद-- प्रिय पदार्थ ।

सत्यभामा--ओ पदार्थ आर्यपुत्र सँ आन कोन भए सकैछ ?

---

२७ - सरहुक - क । २८—मानव - ख ।

नारदः - कथं लज्जसे ?

गौर्या मे गिरिशो दत्तः पौलोम्या च पुरन्दरः ।
तथा तटे तरोरस्य त्वया कृष्णः प्रदीयताम् ॥१७॥

सत्यभामा - (कुशादिकमादाय) अज्ज इत्यादि अकुण्ठिअ-अज्जउत्त-चरणभजण-कामा अज्जउत्तं णारदाय देमि । दक्खिणा च देमि । [अद्येत्यादि अकुण्ठितार्यपुत्रचरणभजनकामा आर्यपुत्रं नारदाय ददे । दक्षिणां च ददे ।]

नारदः - स्वस्ति । सुभद्रे ! त्वया किन्न दीयते धनञ्जयः ?

धनञ्जयः - एवं भवतु । प्रभवति मयि श्रीकृष्णानुजा ।

सुभद्रा - (सलज्जं संकल्प्य ददाति ।)

नारदः - स्वस्ति । युवां मे दासौ संवृत्तौ ।

उभौ - किमधिकं स्यादभीष्टम् ?

नारदः—(सगर्वम्) किङ्करौ ! किं कारयामि ?

श्रीकृष्ण - प्रिये ! हमरा पर अहाँ कें अधिकार अछि । हमरा ब्राह्मणक लेल दान करू ।

सत्यभामा- (लजाइत छथि) ।

नारद-- किएक लजाइत छी ? हमरा गौरी देलनि महादेव, शची देलनि इन्द्र । तहिना अहाँ एहि गाछक तर मे कृष्ण दिअ ।

सत्यभामा-- (कुश आदि लए) अद्य (आइ) इत्यादि अनवरत आर्यपुत्रक चरण-सेवाक कामना सँ आर्यपुत्र कें नारदक हेतु दान करैत छी, दक्षिण सेहो दैत छी ।

नारद-- स्वस्ति । सुभद्रे ! अहाँ अर्जुन किएक नहि दैत छी ?

धनञ्जय-- एहिना हो । श्रीकृष्णक छोटि बहिनि (सुभद्रा) कें हमरा पर अधिकार छन्हि ।

सुभद्रा- (लजाइत संकल्प कएकें दैत छथिन्ह)।

नारद- स्वस्ति । अहाँ दुनू (श्रीकृष्ण ओ अर्जुन) हमर दास भेलहुँ ।

दुनू- एहिसँ बेसी की नीक होएत ?

हलं बिभर्तु श्रीकृष्णः कुद्दालं च धनञ्जयः ।
द्वयो र्वा स्कन्धमारुह्य भूमिष्यामि यथासुखम् ॥१८॥
चरणौ तावत् संवाह्यताम् ।

उभौ—अनुगृहीयमाणयोः ।

नारदः—(स्वगतम्) एवमेतत् । अहो ब्रह्मण्यता लीला वा परमेश्वरस्य !! (प्रकाशम्) केन वा विश्वम्भरस्य वृकोदरानुजस्य च पूर्यतामुदरम्? भवतु विक्रेतव्यौ । (उच्चैः) कोऽपि दासक्रेता वर्तते ?

सुभद्रा—सहि सच्चभामे ! जाव रुविकणी ण किणइ दाव किणिहि अज्जं । [सखि सत्यभामे ! यावद् रुक्मिणी न क्रीणाति तावत् क्रीणीहि आर्यम् ।]

सत्यभामा—(सलज्जम्) एसा किणामि । किं मुल्लं, सुवण्णभारसहस्स, मणिरअणरासी वा, णवणिहिओ वा, तिण्णलोआ वा ? [एषा क्रीणे । किं मूल्यं, सुवर्णभारसहस्रं, मणिरत्नराशि र्वा, नवनिधयो वा, त्रयो लोका वा ?]

नारद — (गर्व सँ) दुनू दास ! कोन काज करावी ?
श्रीकृष्ण हर धरथु ओ अर्जुन कोदारि । अथवा दुनूक कान्ह पर चढ़ि कें जेना मन होएत घुमब ॥१८॥
तावत् दुनू गोटए पएर दबाउ ।

दुनू- ई तँ, हमरा दुनू पर कृपा भेल ।

नारद- (मनहि मन) ठीक । अहो परमेश्वरक ब्राह्मणक प्रति स्नेह वा लीला!! (प्रकाश = सुनाय) अथवा के एहि विश्वम्भरक (संसारक पेट भरयवलाक) ओ वृकोदरक (हुडार सन पेटवलाक) छोट भाए अर्जुनक पेट भरए ? अच्छा, दुनू कें बेचि ली । (जोरसँ) क्यो दास मोल लेब ?

सुभद्रा- सखि सत्यभामे ! यावत् रुक्मिणी नहि किनैत छथि तावत् आर्यके (श्रीकृष्ण कें) कीनि लिअ ।

सत्यभामा- (लजाइत) हमेह किनैत छी । की दाम अछि ? सोनाक हजार भार, मणि ओ रत्नक ढेर, नवो निधि आ कि तीनू लोक ?

नारदः—(कर्णौ पिधाय) शान्तं पापम् !!

सत्यभामा—सच्चं भण, जेण पच्चओ होइ । [सत्यं भण, येन प्रत्ययो भवति ।]

नारदः—धेनुं देहि ।

सत्यभामा—देमि । सहि सुहद्दे ! तुमंपि धणञ्जअं किणिहि, जाव दोवई ण जाणइ । [ददे । सखि सुभद्रे ! त्वमपि धनञ्जयं क्रीणस्व, यावद् द्रौपदी न जानाति ।]

सुभद्रा—अहं पि धेणुं देमि । [अहमपि धेनुं ददे ।]

नारदः—उन्मुक्तौ तौ । सत्यभामे देवि ! सम्पूर्णस्ते बहुमानः ।

सत्यभामा—भवदो आसिसो पसादेण । [भवत आशिषः प्रसादेन ।]

नारदः—किमतः परमिच्छसि ?

(सर्वे गायन्ति ।)

(ललित-रागे गीतम्—२३)

जलधर समय करथु जलदाने । भरलि रहथु धरणी धनधाने ॥
धरमे प्रजा परिपालथु राजा । चारू[29] वरन करथु निज[30] काजा ॥

नारद- (दुनू कान मुनि पापक शान्ति हो (नारायण नारायण !!) ।

सत्यभामा- सत्ते कहू, जाहि सँ विश्वास होअए ।

नारद- गाए दिअ ।

सत्यभामा- दैत छी । सखि सुभद्रे ! अहाँ अर्जुन कें कीनि लिअ, यावत् द्रौपदी नहि बुझथि ।

सुभद्रा- हमहूँ गाए दैत छी ।

नारद- दुनू कें छोड़ि देलियनि । सत्यभामे देवि ! अहाँक बड़ पैघ मान पूरा भेल ।

सत्यभामा- अपनेक आशीर्वादक प्रसाद सँ ।

नारद- एकर बाद आब की चाहैत छी ?

एवकेओ गबैत छथि)

२९—चारि—क्ष । ३०—निज—क्ष ।

बाभन वेद खेद नहि आवे । साधुक सन्धि कुजन जनु पावे ॥
पिशुन पाव जनु नृपतिक काने । गुण बुझि भूप करथु सम्माने ॥
चिरे जीबथु हिन्दूपति देओ । गुण कीरति गाबथि³¹ सब केओ ॥
³²सुमति उमापति भन परमाने । माहेसरि देइ हिन्दूपति जाने ॥

[भरत-वाक्यम्]

उर्वी शस्येन गुर्वी विलसतु सुखिनः सन्तु सर्वे च लोकाः
क्षोणीपालः समन्ताद् दिशतु बहुगुणं मन्त्रविद्भ्यो वसूनि ।
साधूनां सन्निवासः सह पिशुनजनैरेकलोकेऽपि मा भूद्
आशूद्रान्तं कवीनां भ्रमतु भगवती भारती भङ्गिभेदैः ॥१९॥

इति महामहोपाध्याय-कविपण्डितमुख्य-श्रीमदुमापति-विरचितं
पारिजातहरणाख्यं नाटकं समाप्तम् ॥

(ललित- राग मे- गीत-- २३)

धरणी = पृथ्वी । धरमे = धर्म सँ । चारू बरन = ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र । खेद = कष्ट । सन्धि = सम्पर्क । कुजन = दुर्जन पिशुन = चुगिला । नृपतिक = राजाक ॥

[नाट्य—निर्देशकक कल्याण-कामना]

पृथ्वी धान्य सँ परिपूर्ण रहओ, सब लोक सुखी होअओ, राजा सबतरहेँ धनक परामर्श कएकेँ बहुत गुणवान् केँ अवकाश (बड़बाक मौका) देथु । साधुव्यक्तिक निवास दुर्जनक संग एकलोकहु मे नहि हो । कविलोकनिक भगवती वाणी उक्तिवैचित्र्य सँ शूद्र पर्यन्त भ्रमण करथु ॥१९॥

इति म॰म॰ कविपण्डितमुख्य—सुमति श्री उमापति उपाध्यायक
बनाओल पारिजातहरणनाटक सम्पूर्ण भेल ॥

३१---गाबहि--ख । ३२--(पांतीक अभाव)-क ख।



परिशिष्ट – १

उमापतिक स्फुट-काव्य-संग्रह

एखन धरि उमापतिक काव्यकृति मे पारिजातहरण सँ अतिरिक्त किछु गीत ओ श्लोक विभिन्न स्रोत सँ उपलब्ध होइत अछि। एहि सबहिक एकत्र संकलन डॉ॰ रामदेव झा अपन १९८० ई॰ मे मैथिली अकादमी पटना सँ प्रकाशित 'उमापति' नामक पोथी मे कयने छथि । ताहि संग्रह मे गीत सं॰—१० तँ उमापतिक नहि थिकनि, कारण, ई गीत रमापतिक 'रुक्मिणी परिणय' नाटकक छठम अंक मे भेटैत अछि। स्मरणीय थिक जे रमापति अभिनव-सुमति छलाह। उक्त संग्रहक सकल गीत लय 'कतिपय गीतक भ्रष्ट पाठक' उद्धार कय प्रस्तुत संग्रह तैयार भेल अछि। एहि संग्रहक गीत सं॰ —२ एक प्राचीन पोथीसँ मिलाय संशोधित भेल अछि। दुहू संग्रहक गीत सं॰ विवरणः—

'उमापति'	प्रस्तुत सं॰
१	२
२	१
३	१४
४	५
५	७
६	४
७	३
८	६
९	८
१०	×
११	९
१२	१०
१३	११
१४	१२, १३

१

॥ ताराक गीत　दरबारी कान्हरा ॥

शङ्करि ! शरण धएल हम तोर ।
कुकरम देखि अधिक यदि कोपित, की करताह यम मोर ॥धृ०॥
शिवतरु सुरतरु [तर] शिव ऊपर, हास वास अतिघोर ।
सहस दिवस-मणि, चान कोटि जनि, तनु दुति करत इजोर ॥
सोहे खर्ग अति गर्बक पूरनि, लम्बोदरि जगदम्बे ।
मनुज नागवर सकल सुरासुर, सबकाँ तुहि अवलम्बे ॥
वाम हाथ माथ अति कोमल, दहिन खड्गकर काती ।
पाँच कपाल भाल अति राजित, श्रीइन्दीवर काँती ॥
शिव-शव-आसनि ! पास योगिनि-गण, परिहन बाघरि छाला ।
रक्त रक्त लहलह कर रसना, नव यौवन मुण्डमाला ॥
फणि नेउर-केउर, फणि कङ्कण, हृदय हार फणिराजे ।
सह रसना फणि युग, फणि केउर, फणी हार, फणि छाजे ॥
चौदिस फेरब, शव मुण्डावलि, चिता अग्नि सन गेहे ।
तीनि नयन मणिमय सब भूषण, नव जलधर सम देहे ॥
शिव सनकादि आदि ब्रह्मादिक, नर मुनि धरत धेआन ।
त्रिभुवन तारिणि, नरक निवारिणि, सुमति उमापति भान ॥

—मैथिलभक्तिप्रकाश—गीत सं०—२८, पृ०—१४
(मैथिली गीत रत्नावली पृ०—२६, ३०)

२

॥ छिन्नमस्ताक गीत—तोड़ी ॥

जय जय जय परचण्डि चण्डिके ! आदिशक्ति तुअ चण्डी ।
ब्रह्मा शिव हरि, सकल भुवन भरि, तुअ सिरिजल ब्रह्माण्डी ॥

अष्टदल कमल उपर रवि-मण्डल, ता पर त्रिगुण सुरेखी ।
ता पर रति-विपरित मनमथ कर, ता पर तुअ पद पेखी ॥
लहलह रसन दसन अतिचञ्चल, विकट वदन विकराला ।
पीन पयोधर ऊपर राजित, उरग-हार मुण्डमाला ॥
उतम-अङ्ग वह वाम-पाणि कए, दहिन कलप धरि काती ।
निज गल उछिल लिधुर मधुरी मधु, पीबि जिबिअ भल भाँती ॥
योगिनि-युगल पास दुइ पोसल, अरुण तरुण घनश्यामा ।
तीनि नयन तुअ जोति जगत भरि, सहस्र-भानु-अभिरामा ॥
भाव-भक्ति बर दिअ परमेश्वरि ! भुक्ति मुक्ति बरदाने ।
हिमगिरि-कुमरि-चरण हृदय धरि, सुमति उमापति भाने ॥

---मैथिलभक्तिप्रकाश--गीत सं०--२६, पृ० १५ ।

३

भ्रमरान्योक्ति

कमलिनि सङ्गे रङ्गे दिवस गमाओल
　　कुमुदिनि निशि विसराम ।
भमर ! पुछिअ तोहि, सरुप कहह मोहि
　　अधिक प्रीति कोन ठाम ॥
अशन कुसुम रज, भमर ! सुरभि भज
　　दुहु विरचए एक साति ।
एक, दिन बान्धि निरोधि धरति तोहि
　　दोसरि बान्धति पुनु राति ॥
सौरभ लोभ मुगुध मधुकर मन
　　जाए न केतकि - पास ।
काँट बेधत अङ्ग, रस नहि परसङ्ग
　　पाओब परम उपहास ॥

रस बुझ तेँ बुल, रसिक सबहु फुल
अधिक प्रेम गुणवान ।
छत्रपति भूप रसिक रस-बिन्दक
सुमति उमापति भान ॥

—मैथिली गीतरत्नावली।

४

कृष्ण-सौन्दर्य

बेरि बेरि विरचथि, विधि विधु मण्डल
हरिमुख सरि नहि होए।
नयन निरखि निशि, नलिन मलिन होअ
नलिनी बन बस गोए।
हरि एक जना, मोर सएह धना ॥ध्रु०॥
कनक किरिट पुर, केउर नेउर
कङ्कण किङ्किणि पाँती।
इन्द्रनील मनि, बिसकरमे जानि
कसल कनक कत भाँती ॥
शङ्ख सदर्शन गदा सरोरुह
शारङ्ग पीअर बासे।
जनि शशि सूरुज, मेरु उगल कुज
इन्द्रधनु ललित अकासे ॥
मणि श्रुति चरण जुगुत मुकुतावलि
मिलित ललित बनमाला।
जनि सागर सित सामर सरसिज
हंसक पाँति विशाला ॥
धन भादव धन मास किसन पछ
धन आठमि तिथि आजे।
धन मथुरा, धन देवकि वसुदेव
जाहि जनमल यदुराजे ॥

कोटिओ काम उपाम न पावए
की बरनए कवि जाने।
सब परिहरि हरिचरण हृदय धरि
सुमति उमापति भाने ॥

५

शम्भु-नटा

जय शम्भु नटा, जय शम्भु नटा।
हँसि हर हेरथि गौरि निकटा ॥ध्रु०॥
भृङ्गी मधुर मृदङ्ग बजाबथि
नन्दी निपुण झालि झमटा।
ताल तमोरा लए गुन गाबथि
सङ्गहि नारद मुनि बिपटा ॥
चान-कला सँ चूइल अमिअ-रस
तेहि [सओं] जिउल अजिन-लपटा।
गौरि सिंह देखि दुरहि पड़ाइलि
लाज कओन सहजहि लटा ॥
झमइत भानु जटा लय झाँपल
चमकि उठए जनि जलद-घटा।
गङ्ग तरङ्ग भूमि भीजल अति
नयन चमक जनि बिजुरि छटा ॥
हँसथि सखी सभ दए करताली
ताल धरथि जनि सहस घटा।
सानँद भए वर दिअओ दिगम्बर !
सुमति उमापति मिनति गोटा ॥

—(मैथिली पद्य संग्रह-प्रो० रमानाथ झा)

६

विरहिणी

सखि हे ! कि कहब निज अगेआने।
सुपहु कहल जबे, रोस कएल तबे
कर मूनल दुहु काने ॥ध्रु०॥

आएल गमन बेरि, नयन नीर भरि
मोहि किछु कहिओ न भेला ।
एहनि करम-हिनि, हम धनि के धनि
करसँ परश-मनि गेला ॥
ई हम जनितहुँ, एहन निठुर पहु
कुच कञ्चन-गिरि साधि ।
कौशल कर धए, बाहु-लता लए
बिढ़ कए रखितहुँ बाँधि ॥
पिअ सुमरिअ जबे, किअ न मरिअ तबे
बुझि पड़ हृदय पषाने ।
हिमगिरि कूमरि, चरण हृदय धरि
सुमति उमापति भाने ॥
(--प्राचीन-गीत - प्रो० रमानाथझा)

७

उचिती

देखलहु हर वर आज रे । रति पति कें होअ लाज रे ॥
पुरुब पुण्य फल आज रे । शङ्कर हमर समाज रे ॥
करथि हमर घर वास रे । पुरथि सकल मोर आस रे ॥
ओ त्रिभुवन-पति राज रे । हम निरधन धन साज रे ॥
हमर बहुत अभिरोष रे । क्षमा करथि सब दोष रे ॥
सुमति उमापति भान रे । शिव जग के नहि जान रे ॥
(डॉ० रामदेव झा— 'उमापति' पृ०-५२)

८

प्रथम-मिलन

पहिलहि गेलि धनि प्रियतम पासे ।
हृदय अधिक होअ लाज तरासे ॥
थयेँ थिर रहु धनि आँगहु न डोल ।
हेम-मुरति सन मुखहु न बोल ॥

करेँ दुहु धए पहु पास बैसाए ।
तओं पए रहु धनि बदन सकाए ॥
मुख हेरि ताकि भमर भाँपि लेल ।
अङ्कुम सरि कए कमलमुखि लेल ॥
सुमति उमापति दुहु मन अनुमति ।
अभिनव रस बुझ हिन्दुपति नरपति ॥
(डॉ० रामदेव झा-- 'उमापति'- पृ०-५५)

९

सौन्दर्य

आजु देखलि हमे ओ गे रमनी ।
सारद ससिमुखि गति गजगमनी ॥
भउँह कमान नयन सर थामा ।
दुहु कर धनु धए मारलि कामा ॥
कुच जुग सिरिफल-भर नत देहा ।
कमल फुलल जनि बिजुरी रेहा ॥
सामल लोम-लता तनु देहा ।
कनक आकृति जनि [शोभ] मसि-रेहा ॥
बिहँसि बिहँसि मुख करए अनन्दा ।
वसुधा बरिस सुधारस चन्दा ॥
बेदन-मदन उमापति[1] भाने ।
रतिपति-पति शिवु पुरुखक दाने ॥
(डॉ० रामदेव झा— 'उमापति'- पृ०-५६)

१— ई गीत विद्यापतिक भनिता मे 'विद्यापति गीत संग्रह' हस्तलिखित ग्रन्थ संख्या- ६६०८ मिथिला संस्कृत शोध संस्थान दरभङ्गा मे तालपत्र संख्या- ५ पर बहुत पाठान्तर रूप मे अछि। ओहि मे एहि गीतक पाँती सं० ७, ८, ९, ११, १२ भिन्न अछि। भनिताक पद अछि—

भने विद्यापति सुनु देव जानु ।
गुनमति नागरि रस दय आनु ॥

१०

मनाओन

कहहु सरूप कलावति !, देवहु दिवस कत खेद।
मन बुझि अबुझ जकाँ छह, अबहु करह परिछेद ॥
विमुख न कर मुख हिमकर, समुख अबैतें हमे हेरि।
नयना जनु बिछड़ावह, देह मोरि दिठिहुक मेरि ॥
कौशलें करह गतागत, पुनु पुनु मोरि समाज।
उकुतिहि गुपुत बेकत होअ, आबे कत करह बेआज ॥
संशय कर जिव डगमग बिहुँसिहु देह बिसवास।
गाबथि सुमति उमापति, हिमगिरि कुमरि दास ॥

(कविशेखर पुष्पाञ्जलि—खण्ड १, पृ० १६२)

११

॥ प्रेम-विभोर ॥

(धनछी—रागे)

तोहें हमे समुचित पेम।
रतने जडित जनि हेम ॥
भाविनि ! ॥ध्रु०॥
तोहें धनि ! जल, हमे मीन।
एक जीवन, तन भीन ॥
हमे पाओस, तोहें नीप।
हमे गृह, तोहें मणि-दीप ॥
हमे कैरब, तोहें चन्द।
हमे हिअ, तोंहहि अनन्द ॥
हमे अलि, तोहें अरविन्द।
अधर मधुर मकरन्द ॥
सुमति उमापति भान।
हिन्दुपति रस जान ॥

(कविशेखर पुष्पाञ्जलि—खण्ड १, पृ० १६२)

१२

॥ चीरहरण ॥

दस पाँच सखि ब्रजनारी। जत छलि गेकुल धारी ॥
सबहु कएल एक संगे। करइत कत विधि रंगे ॥
बजइत मधु-रस बानी। चललि जमुन दह पानी ॥

छन्द :—धए उतारिअ चीर अभरन, धसलि जमुना धाए ओ।
कदम डारि मुरारि बैसल, लेल चीर चोराए ओ ॥

जमुना-जल भेल केली। सखि सब बाहरि भेली ॥
परिहन अपन न पाओल। तखना कान्ह बुझाओल ॥

छन्दः—कहुहि सखि सओं कान्ह कपटी, चीर कँह केओ पाव ओ।
चीर तोहर अहीर लूटल, लए दहोदिस धाव ओ ॥

रोसें कहलि सब गोरी। 'साति करत भूप तोरी' ॥
'सुनह सुनह तोहें गोरी। कि करत भूपति मोरी" ॥

छन्दः—हारि सब ब्रजनारि देखल, अब न आन उपाय ओ।
लाजें आकुल कएल बिनती, अधर हाथ उठाए ओ ॥

'माधव होथु सहाए। चिर मोरा देथु छोड़ाए' ॥
उमानाथ कवि गाबए। कृष्णकथा परथाबए ॥

(डॉ० रामदेव झा—'उमापति' पृ० ५९)

१३

बाल-चरित्र

दस पाँच सखि ब्रजनारी। दहि-दुध बेचनिहारी ॥
बालचरित्र कृष्ण केली। गबैत जमुन तिर गेली ॥

छन्दः—जाए जमुनातीर सब सखि, ठाढ़ि भेलि ब्रजनागरी।
नील पट तन, साजि भूषन, रूप जौवन आगरी ॥

घाट बैसल नव दानी। सुन्दर सारङ्गपानी ॥
बचन बोलथि हँसी हाँसी। मधुर बजाबथि बाँसी ॥

छन्दः— स्याम सओं हँसि पुछ गोआरिन, 'घाट तोहें घटवार ओ।
जाएब मधुपुर गोरस बेचए, करह जमुना पार ओ' ॥
सेह सुनि कहु स्यामसुन्दर, धए लटुरि भेल ठाढ़ ओ।
रोकि राख गोआरनी सब, दान माङए गाढ़ ओ ॥

हाक देए हनु कान्हे । 'होअह पार कए दाने ॥
'दहि-दुध किछु बरु लेहे। तोरित पार कए देहे' ॥

छन्दः— "नीत मधुपुर गोरस बेचिअ, कबहु लाग न दान ओ।
कोन नगर तोहें बसह दानी, कहह के तुअ जान ओ" ॥
'दान दए दए जाह नित दिन, भल न तोहर गेआन ओ'॥

"सुनह निठुर गोपाल मन दए, भल न तोहर टेब ओ।
एहि जग बसि के न जानए पार गेलें लेब ओ" ॥
"भए गेल दुपहरि बेरी। कखन जाएब गृह फेरी ॥
गरुअ पड़ल किअ आजे। कहिनि कहैतें होअ लाजे" ॥

छन्दः— "आज सब कुल-लाज परिहरि, जाह मथुरा बाट ओ।
नन्दसुत हमे प्रबल दानी, रहिअ जमुना घाट ओ ॥
सुनह नारि गोआरि ! मन दए, कहह सरा सरूप ओ।
गर्व कए नहि दान राखिअ, देखि बालक रूप ओ ॥

कंसक करब विधंसे । उधरब जत जदुबंसे ॥
करब भक्त निज काजे। उग्रसेन देब राजे ॥

छन्दः— बधल पुतना अओ उधारल जमल-अर्जुन दास ओ।
हनि अघे, बक मारि घालल, करब कंस-बिनास ओ ॥
ध्रुवथ निज जन अचल कएकहु, देल निश्चल राज ओ।
एहि महीतल जत भगत-जन, करब सब मिलि काज ओ ॥

सकुचित भेलि सबे नारी। देखि चरित्र बनमाली ॥
लेह आलिङ्गन दाने। अओर अधर मधुपाने ॥

छन्दः— राधिका सओं प्रीति बाढ़ल, कान्ह भरु करहार ओ।
चलल्हि हरषित नारि मधुपुर, कैए जमुना पार ओ ॥

ननुआँ से नन्दकुमारे। जसोमति प्रान अधारे ॥
उमानाथ कवि गावए। कृष्णकथा परथावए ॥

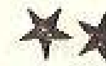
— (डॉ॰ रामदेव झा— 'उमापति'- पृ॰- ५६ सँ ६१)।

१४

नटेश्वरी

आएल नटनेसरि लेल परवेस।
अभरन तेजि धए जोगिन भेस ॥
बघछाल कछिनि गाथल प्रिमहार।
कछनी पहिरि माला भाउरि लेल।
नेपुर सबद मेदिनि उड़ि गेल ॥
सती भवानी गुन अनुमान।
सुमति उमापति होउ समधान ॥

— 'उमापति'- पृ॰- ५१



श्लोक[1]

(१) यत्र ब्रह्मसमुद्भवः, कमलया यस्मिन् निवासः कृतः
पाणौ यत् परमेश्वरेण परम-प्रेम्णा समारोपितम् ।
भो भोः ! कुन्द-कदम्ब-केतकि-जपापुष्पाणि ! वः प्रार्थये
तत् पद्मं कुसुमं, वयञ्च कुसुमान्येवं न कार्यं मनः ॥

— उमानाथ—पण्डितस्य ।

(विद्याकरसहस्रकम्-श्लोकसं० ६४) ।

अर्थ— हे हे कुन्द कदम्ब केतकी ओ ओड़ूल फूल सभ ! तोहरा सभ सँ प्रार्थना करैत छियहु जे जतय ब्रह्माक उत्पत्ति भेल, जाहि पर लक्ष्मी निवास कयलनि, जकरा परमेश्वर विष्णु अत्यन्त प्रेम सँ हाथ मे धारण कयलनि— से कमलो फूले थिक आ हमरो लोकनि फूले थिकहुँ- एहन मन नहि करह ॥

(२) अज्ञास्तरन्ति पारं, विज्ञा विज्ञाय झाङ् निमज्जन्ति ।
कथय कलावति ! केयं, तव नयन-तरङ्गिणी-रीतिः ॥

— उमानाथ-पण्डितस्य ।

(विद्याकरसहस्रकम् श्लोकसं० ४८२) ।

अर्थ— हे कलावती ! तोहर आँखिरूपी नदीक ई कोन तरहक स्वभाव छह जे बिनु बुझनिहार लोक तँ पार भए जाइत छथि, मुदा, बुझनिहार तँ बुझितहि झट दय डुबिए जाइत छथि ?- से कहह ॥

1— उमापतिक एक श्लोक "पद्यरचना" पृ० ४४ पर अछि ।